Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 10
अंक - 37
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

18 रबीउल् अव्वल , 1446-47 हिज्री कमरी, 11 तबूक 1404 हिज्री शम्सी, 11 सितमबर 2025 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ یَّشۡرِیۡ نَفۡسَہُ ابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ اللّٰہِ ؕ وَاللّٰہُ رَءُوۡفٌۢ بِالۡعِبَادِ ۝

(सूरः बकरः आयत **:208**)

अनुवाद : और लोगों में से कोई ऐसा भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता के लिए अपनी जान बेच देता है, और अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा दयावान है।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

ईमान का उच्चतम मानक

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: एक आदमी ने दूसरे आदमी से कुछ ज़मीन ख़रीदी। ख़रीदने वाले को उस ज़मीन से सोने से भरा हुआ एक घड़ा मिला। इस पर ख़रीदने वाले ने बेचने वाले के पास जाकर कहा: "तुमने जो ज़मीन मेरे पास बेची है, उसमें से यह सोना मिला है। इस सोने पर तुम्हारा हक़ है, क्योंकि मैंने तो सिर्फ़ ज़मीन ख़रीदी है, यह सोना नहीं ख़रीदा। इसलिए, मैं यह तुम्हें वापस करने आया हूँ।"

जिसने जायदाद बेची थी, उसने उत्तर दिया: "मैंने तो तुम्हारे पास ज़मीन और जो कुछ उसमें है, समस्त अधिकारों के साथ बेच दी है। इसलिए, मैं यह सोना वापस नहीं लूँगा।"

आख़िर यह तनाज़ेआ (विवाद) वह दोनों एक बुज़ुर्ग के पास ले गए। उसने हालात सुनकर पूछा: "क्या तुम्हारा कोई बच्चा है?" उनमें से एक ने कहा: "मेरा लड़का है।" दूसरे ने कहा: "मेरी लड़की है।"

इस पर तीसरे (मध्यस्थ) ने तजवीज़ (सुझाव) किया कि तुम इन दोनों की आपस में शादी कर दो और शादी का ख़र्च इस सोने से पूरा करो। इसलिए, वह इस फ़ैसले पर राज़ी हो गए और शादी के ज़रिए शिष्टाचार के यह अनमोल नमूने रूहानी क़ुर्ब (नज़दीकी) के साथ-साथ दुनियावी रिश्ते में भी एक-दूसरे के क़रीब हो गए।

ख़ुदा ने मुख़ालिफ़ों से ताक़त और इल्म छीन लिया है। अगर मुख़ालिफ एक विशेष व्यक्ति या कई जानें एक क़ालब (शरीर) बन कर इस तफ़्सीर के मुक़ाबले में लिखना चाहें तो हरगिज़ न लिख सकेंगे

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

एक अज़ीम चमत्कार

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "आज रात इलहाम हुआ: مَنَعَہٗ مَانِعٌ مِّنَ السَّمَآءِ यानी इस तफ़्सीर-नवीसी में कोई मेरा मुक़ाबला न कर सकेगा। ख़ुदा ने मुख़ालिफ़ों से ताक़त और इल्म छीन लिया है। हालाँकि ज़मीर (सर्वनाम) वाहिद मुज़क्कर ग़ायब (एकवचन, पुल्लिंग, अनुपस्थित) एक शख़्स यानी मेहर शाह की तरफ़ है, लेकिन ख़ुदा ने हमें समझाया है कि इस शख़्स के वजूद में सभी मुख़ालिफ़ों के वजूद को शामिल करके एक ही का हुक्म रखा है ताकि अला से अला और आज़म से आज़म चमत्कार साबित हो कि सारे मुख़ालिफ़ एक विशेष व्यक्ति या कई जानें एक क़ालब (शरीर) बन कर इस तफ़्सीर के मुक़ाबले में लिखना चाहें तो हरगिज़ न लिख सकेंगे।"

फ़रमाया: "इंसान का काम इंसान कर सकता है। हमारे मुख़ालिफ़ इंसान हैं और आलिम और मौलवी कहलाते हैं, फिर क्या वजह है कि जो काम हमने किया वह नहीं कर सकते। यही एक चमत्कार है। नबी अगर एक पत्थर फेंके और कहे कि मेरे सिवा कोई इसे उठा न सकेगा तो यह भी एक चमत्कार है, चह जाए कि तफ़्सीर-नवीसी तो एक इल्मी चमत्कार है।"

फ़रमाया: "क़ुरआन शरीफ़ के चमत्कार-ए-फ़साहत व बलाग़त के उत्तर में एक दफ़ा पादरी फंडर ने हरीरी और अबुल फ़ज़ल और कुछ अंग्रेज़ी किताबों को पेश किया था। मुद्दत की बात है, हमने उस वक्त भी यही सोचा था कि यह झूठ बोलता है क्योंकि अव्वल तो उन मुसन्निफ़ीन को कभी यह दावा नहीं हुआ कि उनका कलाम बे-

शेष पृष्ठ 7 पर

उसकी आवाज़ में कंपन था, उसकी आँखों में आँसू थे, ऐसा लगता है कि वह अवश्य ही किसी दिन मुसलमान हो जाएगा। यह एक असाधारण परिवर्तन था जो हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अंदर पैदा हुआ और तत्काल आप तीव्र शत्रु से उच्च कोटि के मोमिन बन गए।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः मोमिनून की आयत "सुम्मा अनशअ्नाहु खल्कन आख़र" की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं:

आख़िर में इस बात का बयान कर देना भी आवश्यक जान पड़ता है कि इन आयतों में "सुम्मा अनशअ्नाहु खल्कन आख़र" फ़रमाकर अल्लाह तआला ने जिस रूहानी मक़ाम का ज़िक्र फ़रमाया है, यह वह मक़ाम है जो मेहनत और कुर्बानी और जद्दोजहद और लगातार अमल के साथ जुड़ा हुआ है और जिसके लिए एक लंबे अरसे तक इंसान को अपने नफ़्स की जिला (सफ़ाई) में व्यस्त रहना पड़ता है। लेकिन कुछ तब्दीलियाँ ऐसी भी होती हैं जो इंक़िलाबी तौर पर वाक़ि होती हैं और तुरंत इंसान को ज़मीन से उठाकर अर्श पर पहुँचा देती हैं। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के ईमान लाने का वाक़िया इस इंक़िलाब की एक ज़िंदा मिसाल है। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) को इस्लाम से तीव्र दुश्मनी थी लेकिन उनमें रूहानी काबिलियत भी मौजूद थी यानी इसके बावजूद कि आप में तीव्र गुस्सा था, इसके बावजूद कि रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और आपके सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को तकलीफ़ें पहुँचाते थे, उनके अंदर जज़्बा-ए-रिक्त (कोमल भावना) भी मौजूद था। चुनाँचि जब हबशा की तरफ पहली हिज्रत हुई तो मुसलमानों ने नमाज़ फज्र से पहले मक्का से रवानगी की तैयारी की ताकि मुश्रिक उन्हें न रोकें और उन्हें कोई तकलीफ़ न पहुँचाएँ। मक्का में यह रिवाज था कि रात को कुछ रुसा-ए-शहर (शहर के बड़े लोग) का दौरा किया करते थे ताकि चोरी आदि न हो। इसी दस्तूर के मुताबिक हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी रात को घूम रहे थे कि आपने देखा एक जगह घर का सारा सामान बँधा पड़ा है। आप आगे बढ़े। एक सहाबिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) सामान के पास खड़ी थीं। उस सहाबिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) के खावंद (पति) के साथ शायद हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के तआल्लुकात थे। इसलिए आपने उस सहाबिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) को मुखातिब करके कहा: बीबी, यह क्या बात है? मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम किसी लंबे सफ़र पर जा रही हो। उस सहाबिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) का खावंद वहाँ नहीं था। अगर वह वहाँ होता तो हो सकता था कि मुश्रिकीन-ए-मक्का की अदावतों और दुश्मनियों की वजह से हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की यह बात सुनकर वह कोई बहाना बना देता। लेकिन औरत को यह हिस्स (समझ) नहीं थी। उस सहाबिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: उमर! हम तो मक्का छोड़ रहे हैं। उन्होंने कहा: तुम मक्का छोड़ रही हो? सहाबिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: हाँ, हम मक्का छोड़ रहे हैं। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने पूछा: तुम मक्का क्यों छोड़ रही हो? सहाबिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने उत्तर दिया: उमर! हम इसलिए मक्का छोड़ रहे हैं कि तुम और तुम्हारे भाई हमारा यहाँ रहना पसंद नहीं करते और हमें ख़ुदा-ए-वाहिद की इबादत करने में यहाँ आज़ादी मयस्सर नहीं है। इसलिए हम वतन छोड़कर किसी दूसरे

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

मक्का की विजय के तुरंत बाद मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने मूर्तियों के ठिकानों को नष्ट करने का आदेश दिया ताकि लोगों के दिलों से उनके काल्पनिक डर और महानता का विचार दूर हो जाए और यह बुद्धिमत्तापूर्ण फैसला बहुत धन्य साबित हुआ क्योंकि उनके विध्वंस से लोगों के दिलों में उनका झूठा डर और आतंक दूर हो गया और उन्हें यकीन होने लगा कि वह एक और अद्वितीय ईश्वर का विचार ही सही है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने पेश किया है।

कुरैश के नेताओं में से इस्लाम स्वीकार करने वालों में सबसे अधिक नमाज़ और रोज़े के पाबंद और दान देने में सुहैल से बढ़कर और कोई नहीं था। अत्यधिक रोने-गिड़गिड़ाने वाले थे। कुरआन पढ़ते समय अक्सर रोया करते थे।

मक्का की विजय के अवसर पर इस्लाम स्वीकार करने वाले मक्का के नेताओं की बहुमत ने बाद में अपने जीवन में एक ज़बरदस्त आध्यात्मिक परिवर्तन पैदा किया था।

विजय मक्का के संदर्भ में मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के जीवन का हृदयस्पर्शी वर्णन।

माननीय चौधरी अब्दुल ग़फ़ूर साहिब (जाम शोरो, सिंध) और माननीय मुहम्मद अली साहिब (करतारपुर, फैसलाबाद) के उल्लेखनीय योगदान और उनकी अनुपस्थित नमाज़-ए-जनाज़ा गायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 01 अगस्त 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जलसा से पहले मक्का की विजय की घटनाओं का उल्लेख हो रहा था। मैंने कुछ इस्लाम के कट्टर विरोधियों और उनके इस्लाम स्वीकार करने का उल्लेख किया था। उनमें से कुछ और भी हैं। एक वहशी बिन हर्ब है। उहुद की लड़ाई में हज़रत हमज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) को इसी ने शहीद किया था और मक्का की विजय के बाद तायफ भाग गया। जब ताइफ वालों ने इस्लाम स्वीकार किया तो यह भी आया और इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(सबुल अल-हुदा भाग 5 पृष्ठ 225, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)

बुख़ारी की रिवायत में वहशी के इस्लाम स्वीकार करने का उल्लेख इस तरह है जो खुद उसने बयान किया है। कहता है मैं मक्का में ठहरा रहा यहाँ तक कि जब इसमें इस्लाम फैला तो फिर मैं ताइफ की तरफ निकल गया। लोगों ने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की तरफ दूत भेजे और मुझसे कहा गया कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) दूतों से दखलअंदाजी नहीं करते। उन्होंने कहा मैं उनके साथ निकला यहाँ तक कि मैं पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के पास पहुँचा। आपने जब मुझे देखा तो फ़रमाया क्या तुम वहशी हो? मैंने कहा जी हाँ। आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुमने हमज़ा को क़त्ल किया था? मैंने कहा बात यही है जो आपको पहुँची है। आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तुम्हारे लिए संभव है कि तुम अपना चेहरा मुझसे छिपा लो? कहते हैं इसके बाद मैं वहाँ से निकल गया। यानी आपका पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का मतलब यह था कि मुझे अपना चेहरा मत दिखाओ ताकि मुझे दोबारा ख्याल न आ जाए। फिर जब पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का इंतकाल हुआ और मुसैलिमा कज़्ज़ाब ने बगावत की तो कहते हैं कि मैंने कहा कि मैं मुसैलिमा की तरफ ज़रूर निकलूँगा ताकि मैं उसे क़त्ल करूँ और उसके ज़रिए हज़रत हमज़ा का बदला अदा कर सकूँ। उन्होंने कहा मैं भी लोगों के साथ निकला। फिर उसका वह हाल हुआ जो हुआ यानी उसे क़त्ल किया गया। कहते हैं कि मैंने देखा कि एक शख़्स दीवार के एक सुराख में खड़ा है। ऐसा मालूम होता था कि जैसे गेहूँए रंग का एक ऊँट है। सिर के बाल बिखरे हुए हैं। यह मुसैलिमा कज़्ज़ाब था जिसको उन्होंने वहाँ खड़ा देखा। उन्होंने कहा कि मैंने उसे अपनी भाला मारी और उसे उसकी छातियों के बीच मारा यहाँ तक कि वह उसके दोनों कंधों के बीच से निकल गई। उन्होंने कहा कि अंसार में से एक शख़्स उसकी तरफ लपका और उस की खोपड़ी पर तलवार की ज़ोरदार मार लगाई। इस तरह वह क़त्ल किया गया।

(सहीह अल-बुखारी, किताब अल-मगाज़ी, बाब कत्ले हमज़त इब्न अब्दुल मुत्तलिब (रज़ियल्लाहु अन्हु), हदीस 4072)

इसी तरह एक अम्र इब्न हाशिम की लौंडी सारा थी। यह गायिका थी। मक्का की विजय से पहले आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की खिदमत में हाजिर हुई और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से कुछ माँगा और मोहताजी का शिकवा किया। आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: तुम्हारे गाने को क्या हुआ, तुम तो बड़ा गाना गाया करती थी, पैसे कमाती थी? उसने कहा जब से मुशरिकों के सरदार गज़वा-ए-बदर में मारे गए हैं उन्होंने गाने सुनने बंद कर दिए हैं। आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने उसे एक ऊँट अनाज अता फ़रमाया फिर वह कुरैश के पास आ गई। इब्न खतल उसे पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बारे में निंदा के शेर बताता था और यह उन निंदा के शेरों को गाती थी। यह इनाम लेने के बावजूद भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आई और यह वही थी जिसके पास हज़रत हातिब का खत मिला था। उसने इस्लाम स्वीकार किया और हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की खिलाफ़त तक जिंदा रही।

इसी तरह एक इब्न खतल की लौंडी फरतना थी। यह भी आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बारे में निंदा के शेर गाती थी। उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया था।

(सबुल अल-हुदा व अर-रशाद भाग 5 पृष्ठ 225, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)

फिर हज़रत हारिस इब्न हिशाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) के इस्लाम स्वीकार करने के बारे में लिखा है। यह मक्का का एक हर दिल अज़ीज़ रईस था और अबू जहल का बाप की तरफ से भाई था। हज़रत खालिद इब्न वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की बहन उसकी बीवी थी। मक्का की विजय के मौके पर यह और अब्दुल्लाह इब्न अबी रबीया हज़रत उम्मे हानी (रज़ियल्लाहु अन्हा) के घर दाखिल हो गए क्योंकि हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) उनके पीछे उनको क़त्ल करने के लिए आ रहे थे। हज़रत उम्मे हानी (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने उन दोनों को अपने घर में छिपाकर पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की खिदमत में हाजिर होकर अर्ज किया कि मैंने उनको पनाह दी है जिस पर आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने हज़रत उम्मे हानी से फ़रमाया। जिसे तुमने पनाह दी उसे हमने पनाह दी।

(सीरत-ए-हलबिया पृष्ठ 133-134, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)

हारिस इब्न हिशाम बयान करते हैं कि हम दो दिन उस घर में ठहरे रहे फिर हम अपने घरों की तरफ चले गए। हम आँगन में बैठे हुए थे, कोई हम से दख़लअंदाजी नहीं करता था। हमें हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से डर लगता था। कहते हैं कि अल्लाह की कसम मैं चादर ओढ़े अपने दरवाजे पर बैठा हुआ था तो अचानक हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) आ गए। उनके साथ कुछ मुसलमान थे। उन्होंने सलाम किया और गुजर गए। यह बयान करते हैं कि मुझे शर्म आती थी कि पैगंबर मुहम्मद

(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) मुझे देखें क्योंकि आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने मुझे हर जगह मुशरिकों के साथ देखा था। फिर मुझे आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की नेकी, रहमत और सिला-ए-रहमी याद आ गई। मैंने आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से मुलाकात की। उस वक्त आप मस्जिद-ए-हराम में दाखिल हो रहे थे। आपने मेरे साथ खुशदिली से मुलाकात की। मैंने आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को सलाम किया और कलिमा-ए-शहादत पढ़ा। आपने फ़रमाया: सारी तारीफें अल्लाह तआला की हैं जिसने तुम्हें हिदायत दी है। तुम जैसा इंसान इस्लाम से कैसे दूर रह सकता था। हारिस ने कहा अल्लाह की कसम! मैंने देख लिया है कि इस्लाम से दूर नहीं रहा जा सकता।

(सीरत-ए-हलबिया भाग 3 पृष्ठ 133-134, 146, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)(इमता भाग 1 पृष्ठ 389, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)(सबुल अल-हुदा भाग 5 पृष्ठ 250, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)(ओसोदुल् गाबा भाग 1 पृष्ठ 644-645, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)

इसी तरह सुहैल बिन अम्र का इस्लाम कबूल करना है। यह भी मक्का का एक रईस था और यह वही था जो समझौता-ए-हुदैबिया करने के लिए कुरैश की तरफ से प्रतिनिधि के रूप में आया था। सुहैल बिन अम्र बयान करते हैं कि जब आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) मक्का में दाखिल हुए और विजय प्राप्त कर ली तो मैं अपने घर में चला गया। मैंने दरवाजा बंद कर लिया। मैंने अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह को आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की सेवा में भेजा ताकि वह मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से मेरे लिए सुरक्षा की गुज़ारिश करे। मुझे डर था कि कहीं मुझे मार नहीं दिया जाएगा। हज़रत अब्दुल्लाह आपकी सेवा में हाजिर हुए और कहा: हे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)! मेरे पिता आपसे सुरक्षा की माँग कर रहे हैं। मक्का वासियों को तो सामान्य माफी और सुरक्षा दी जा चुकी थी। दरअसल, यह वे कुफ्र के नेता थे और इतने कट्टर विरोधी रह चुके थे कि उन्हें यकीन नहीं होता था और वह सोच भी नहीं सकते थे कि वह सुरक्षा में रहेंगे और अपनी अज्ञानतापूर्ण सोच के मुताबिक उन्हें हमेशा यह डर सताता रहता था कि उनसे बदला लिया जाएगा, जिसकी वजह से उन्होंने अपने बेटे को फिर दोबारा आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की सेवा में भेजा। आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: ठीक है, वह अल्लाह तआला की सुरक्षा के साथ सुरक्षित है। वह सामने आए यानी आज़ादी के साथ बाहर घूमे-फिरे। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अपने आस-पास बैठे हुए सहाबा से फ़रमाया: तुम में से जो सुहैल से मिले, उसे तेज नज़रों से न देखे। सुहैल जैसा बुद्धिमान और सम्मानित व्यक्ति ज्यादा देर इस्लाम से दूर नहीं रह सकता। उसने देख लिया है कि जिस हालत में वह था यानी कुफ्र की जो स्थिति है, वह उसके लिए फायदेमंद नहीं है। हज़रत अब्दुल्लाह अपने पिता के पास गए और उन्हें रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के फरमान के बारे में बताया तो सुहैल ने कहा: अल्लाह की कसम! आप यानी पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) बचपन में भी एहसान करने वाले थे और इस उम्र में भी एहसान करने वाले हैं।

हज़रत सुहैल सुरक्षा से आते-जाते रहे। ग़ज़वा-ए-हुनैन में आपके साथ मुशरिक होने की हालत में शामिल हुए थे। ग़ज़वा-ए-हुनैन में शामिल हुए लेकिन उस वक्त इस्लाम नहीं लाये थे। ग़ज़वा-ए-हुनैन से वापसी पर जिराना नामक जगह पर इस्लाम कबूल कर लिया, जो मक्का से सत्ताईस किलोमीटर के फासले पर बताया जाता है, ताइफ के रास्ते में एक कुआँ है।

(सीरत-ए-हलबिया भाग 3 पृष्ठ 146, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)

(इमता अल-अस्मा भाग 13 पृष्ठ 386, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)(फरहंग-ए-सीरत पृष्ठ 88, ज़वार एकेडमी)

इस्लाम कबूल करने के बाद उनमें हैरतअंगेज रूहानी इंकिलाब पैदा हुआ। लिखा गया है कि फतह-ए-मक्का पर कुरैश के सरदारों में से इस्लाम कबूल करने वालों में सबसे ज्यादा नमाज़, रोज़े के पाबंद और सदका देने में सुहैल से बढ़कर और कोई नहीं था। बहुत ज्यादा रोने-धोने वाले थे। कुरआन पढ़ते वक्त अक्सर रोया करते थे।

(ओसोदुल् गाबा भाग 2 पृष्ठ 586, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)

हज़रत अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि मैंने हज्जतुल विदा में देखा कि सुहैल बिन अम्र ज़बह (कुरबानी) करने की जगह पर खड़े हैं और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के कुरबानी के जानवर को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के करीब कर रहे हैं। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अपने हाथ से उसे ज़बह किया। फिर सिर मुंडवाने वाले को बुलाया और अपने बाल मुंडवाए। कहते हैं कि मैंने सुहैल को देखा कि पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बाल मुबारक अपनी आँखों से लगा रहा था। जो बाल पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने कटवाए थे, वह सुहैल के हाथ में आए तो उन्होंने अपनी आँखों से लगाया। कहते हैं उस वक्त मुझे याद आ गया कि यही सुहैल सुलह-ए-हुदैबिया के वक्त आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को 'बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम' लिखने से रोक रहा था जो समझौते पर लिखी जानी थी और 'मुहम्मद' के साथ 'रसूलुल्लाह' लिखने पर भी एतराज़ कर रहा था और जब तक 'रसूलुल्लाह' का लफ़्ज़ नहीं मिटाया गया, उसने समझौता लिखना शुरू नहीं किया था। हज़रत अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि मैंने अल्लाह तआला की हम्दो सना (प्रशंसा और गुणगान) बयानकी जिसने सुहैल को इस्लाम की तरफ हिदायत दी और फिर जब हिदायत दी तो फिर इख्लास और वफा में बेहद आगे बढ़ गए।

(सबुल अल-हुदा भाग 5 पृष्ठ 64, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)

सुहैल बिन अम्र का एक और करनामा बयान किया जाता है। कहते हैं सुहैल कुरैश के बहुत बड़े खतीब (वक्ता) भी थे। यह ग़ज़वा-ए-बदर में काफिर होने की हालत में मुसलमानों के कैदी बने। उन्होंने अपने होंठों पर निशान बना रखा था। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इस मौके पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से अर्ज किया कि हे अल्लाह के रसूल! इसके सामने के दो दांत निकलवा दें जहाँ इसने निशान बनाए हुए हैं। यह आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के खिलाफकभी भी भाषण देने के लिए खड़ा नहीं हो सकेगा। इसके दांत निकलवा दें, मुँह में दांत नहीं होंगे तो ठीक से बोला नहीं जाएगा।

आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: हे उमर! इसे छोड़ दो। करीब है कि यह ऐसे मुकाम पर खड़ा हो कि तुम इसकी तारीफ करो।

हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) तो उसे सज़ा दिलवाना चाहते थे। पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने कहा: नहीं, कुछ नहीं कहना। एक मौका आएगा जब यह उस मुकाम पर खड़ा होगा और ऐसी बातें करेगा कि तुम उसकी तारीफ करोगे। बहरहाल, वह कहते हैं कि यह मुकाम उस वक्त आया जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का इंतकाल हुआ तो मक्का वाले डगमगा गए। जब कुरैश ने मक्का वालों को मुरतद (धर्मत्यागी) होते देखा और ऐसी बुरी हालत हो गई कि हज़रत अत्ताब बिन असीद उमवी, जो नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की तरफ से मक्का वालों पर अमीर मुकर्रर थे, वह छिप गए, तो उस वक्त हज़रत सुहैल बिन अम्र तकरीर (भाषण) करते हुए खड़े हुए और कहा: हे कुरैश के गिरोह! तुम आखिर में इस्लाम लाए हो। आखिर में इस्लाम लाकर सबसे पहले इरतिदाद (धर्मत्याग) करने वाले न बनना। अल्लाह की कसम! यह दीन उसी तरह फैलेगा जिस तरह कि चाँद और सूरज तुलूअ (उदय) से गुरूब (अस्त) तक फैलते हैं। इस तरह आप यानी सुहैल ने एक लंबा भाषण दिया। चुनाँचि इस भाषण ने मक्का वालों के दिलों पर असर किया और वह रुक गए। हज़रत अत्ताब बिन असीद जो छिप गए थे, वह भी बुलाए गए और कुरैश इस्लाम पर साबित-कदम हो गए।

(ओसोदुल् गाबा भाग 2 पृष्ठ 585, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बेरूत)

फ़तह-ए-मक्का के दिन जब मक्का विजय के दिन आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मक्का में तशरीफ़ लाए, तो आपने मुझे फ़रमाया, "तुम्हारे भतीजे अबु लहब के बेटे उत्बाह और मुअत्तब कहाँ हैं? मैंने उन्हें नहीं देखा।" पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कहा, "मैंने उन्हें नहीं देखा। वे कहाँ हैं?" हज़रत अब्बास ने कहा, "वे अन्य बहुदेववादियों की तरह अलग-थलग हैं।" आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "उन्हें मेरे पास लाओ।" हज़रत अब्बास सवार होकर अरनाह गए, जो अराफ़ात के पास एक घाटी है, और उन्हें ले आए।

जब आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उन्हें इस्लाम की दावत दी, तो उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया और दोनों ने बैअत (निष्ठा की प्रतिज्ञा) की। फिर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) खड़े हुए, उनके हाथ पकड़े और उन्हें मुल्तज़िम पर ले आए, जो हजर-ए-असवद और काबा के दरवाज़े के बीच काबा की दीवार का हिस्सा है, जिससे लिपटकर दुआ मांगना सुन्नत है और यह दुआ की कुबूलियत का विशेष स्थान है। आपने कुछ देर दुआ की, फिर वापस तशरीफ़ ले आए। आपके चेहरे पर खुशी देखी जा सकती थी। हज़रत अब्बास ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)! अल्लाह आपको खुश रखे। मैं आपके चेहरे पर खुशी के आसार देख रहा हूँ।" आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "मैंने अपने चाचा के इन दो बेटों को अपने रब से मांगा था, तो उसने मुझे यह अता कर दिया।"

(सबुल अल-हुदा, भाग 5, पृष्ठ 250, दारुल-कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत) (फरहंग-ए-सीरत, पृष्ठ 59, 284, ज़ुवार एकेडमी)

सफ़वान बिन उमय्या का इस्लाम स्वीकार करना इसके बाद सफ़वान बिन उमय्या का इस्लाम स्वीकार करना है। सफ़वान बिन उमय्या मक्का के सरदार उमय्या

बिन खल्फ का बेटा था। जहालत (अज्ञानता) के दौर में वह क़ुरैश के रईसों में से था और क़ुरैश के सबसे फ़सीह-उल-बयान (सुवक्ता) लोगों में से एक था और इस्लाम का सख्त दुश्मन था। वह मुसलमानों को मक्का में तकलीफ़ और अज़िय्यत देने वालों में से एक था। गज़वाह-ए-बद्र के बाद उसने नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के क़त्ल की साज़िश भी रची थी और उमैर बिन वहब को इस काम के लिए तैयार किया था।

हालांकि उसका नाम उन लोगों में शामिल नहीं था जिनके क़त्ल का हुक्म हुआ था, लेकिन वह खुद इस ख़ौफ और अंदेशे से मक्का से भाग गया था कि उसे मार दिया जाएगा। वह बह्रे-ए-अरहर (लाल सागर) की ओर, जिद्दा की ओर भाग गया। उमैर बिन वहब, जो उसका दोस्त था और जिसने इस्लाम स्वीकार कर लिया था। वही उमैर था जिसे सफ़वान ने यह कहकर हज़रत अनवर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को क़त्ल करने के लिए मदीना भेजा था कि यदि तुम उन्हें क़त्ल कर दो, तो तुम्हारे बच्चों की कफ़ालत और हज़त मेरी ज़िम्मेदारी होगी। लेकिन जब उमैर मदीना पहुंचा...

नबी अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को उसके सारे मंसूबे का इल्म हो गया और यह चमत्कार देखकर उमैर उसी वक्त मुसलमान हो गया। अब फ़तह-ए-मक्का के मौके पर उमैर अपने दोस्त सफ़वान के इस्लाम लाने का आरज़ूमंद थे और फिक्रमंद थे। हज़रत उमैर बिन वहब (रज़ियल्लाहु अन्हु) हज़रत अनवर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ! सफ़वान मेरी क़ौम का सरदार है। वह आपके ख़ौफ से भाग गया है। आप उसे अमान (सुरक्षा) प्रदान फरमाएँ।" आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "उसे अमान है।" उन्होंने दरख़्वास्त की कि मुझे अपनी कोई निशानी ||| फरमाएँ, जो मैं उसे आपकी तरफ़ से अमान के तौर पर दिखा सकूँ। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अपना पहन रखा हुआ अम्मामा (पगड़ी) उतारा और उसे दे दिया।

हज़रत उमैर सफर पर रवाना हुए, यहाँ तक कि सफ़वान को जा लिया, जो एक कश्ती में सवार होने वाला था। हज़रत उमैर ने उससे कहा, "मैं उस जात के पास से आया हूँ जो सारे लोगों से ज़्यादा पाकबाज़ है, सारे लोगों से ज़्यादा सिला-ए-रहमी (रिश्तेदारी निभाने वाला) करने वाला है। खुद को हलाकत में न डालो, मैं तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की अमान लेकर आया हूँ।" सफ़वान ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ वापस नहीं जाऊँगा, जब तक तुम मुझे उनकी कोई निशानी न दिखाओ जिसे मैं जानता हूँ।" इस पर उन्होंने उन्हें आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का दिया हुआ अम्मामा दिखाया। सफ़वान हज़रत उमैर के साथ आ गया।

वह रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास हाज़िर हुआ तो आप उस वक़्त मस्जिद में सहाबा को असर की नमाज़ पढ़ा रहे थे। जब आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सलाम फेरा, तो सफ़वान ने बुलंद आवाज़ से कहा, "ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ! उमैर मेरे पास आपकी चादर लेकर आया है कि आपने मुझे अमान दी है।" आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "बिल्कुल दुरुस्त है।" उसने कहा, "मुझे दो महीने की मोहलत दें, मैं अभी इस्लाम स्वीकार करना नहीं चाहता।" आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "चार महीने दिए जाते हैं। उम्मीद है कि तुम इस्लाम स्वीकार कर लोगे।" इसलिए, सफ़वान बहुदेववादी होने की हालत में ही मक्का में रहने लगा।

जब आप हवासिन तशरीफ़ ले गए और गज़वाह-ए-ताइफ़ और हुनेन के बाद माल-ए-ग़नीमत (लूट का माल) तक़सीम फ़रमाया, तो आपने सफ़वान को देखा। वह उस घाटी को देख रहा था जो भेड़ों-बकरियों से भरी हुई थी। वह लगातार उन्हें देख रहा था। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) भी सफ़वान को देख रहे थे कि वह उस घाटी को देख रहा है जहाँ माल भरा हुआ है। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "क्या इस घाटी ने तुम्हें अचंभित कर दिया है कि कितना माल इस घाटी में है?" सफ़वान ने कहा, "हाँ!" आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "यह घाटी और इसमें जो कुछ है, सब तुम्हारा है। ले जाओ इसे।" सफ़वान ने उनके सारे अमवाल (संपत्ति) पर क़ब्ज़ा कर लिया और कहा, "जिस उम्दा तरीक़े पर नबी का नफ़्स सखावत (उदारता) करता है, उस तरह कोई भी नहीं कर सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं।" और इसी जगह उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

सफ़वान ने मक्का में 42 हिजरी में हज़रत मुआविआ के ख़िलाफ़त में वफ़ात पाई। कुछ कहते हैं कि हज़रत उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हु) की शहादत के हंगामे के वक़्त शहीद हुए।

(सबुल अल-हुदा व अल-रशाद, भाग 5, पृष्ठ 253-254, दारुल-कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत) (सीरत हलबिया, भाग 3, पृष्ठ 135, दारुल-कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)(फ़तह-ए-मक्का, लेखक मुहम्मद बाशमील, पृष्ठ 321-325, नफ़ीस एकेडमी, कराची) (असद अल-ग़ाबा, भाग 3, पृष्ठ 24-25, दारुल-कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)(सीरत ख़ातम अल-नबीय्यीन (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ियल्लाहु अन्हु), एम.ए., पृष्ठ 297) (इब्न हिशाम, पृष्ठ 449, दारुल-कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)

मक्का के रईसों का रुहानी इंक़लाब

फ़तह-ए-मक्का के मौके पर इस्लाम स्वीकार करने वाले इन मक्का के रईसों की अधिकतर ने बाद में अपनी ज़िंदगी में एक ज़बरदस्त रुहानी इंक़लाब पैदा किया था।

हज़रत मुसह-ए-मवऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) इसका ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) एक दफ़ा अपने ज़माने-ए-ख़िलाफ़त में मक्का तशरीफ़ लाए तो शहर के बड़े-बड़े रईस, जो मशहूर ख़ानदानों से थे, उनसे मिलने के लिए आए। उन्हें ख़्याल पैदा हुआ कि हज़रत उमर हमारे ख़ानदानों से अच्छी तरह वाकिफ़ हैं, इसलिए अब जबकि वह खुद बादशाह हैं, हमारे ख़ानदानों का भी पूरी तरह एज़ाज़ (सम्मान) करेंगे और हम फिर अपनी खोई हुई इज़्ज़त को हासिल कर सकेंगे। इसलिए, वे आए और उन्होंने हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से बातें शुरू कर दीं। अभी वे बातें कर ही रहे थे कि हज़रत उमर की महफ़िल में हज़रत बिलाल आ गए। थोड़ी देर गुज़री तो हज़रत ख़ुब्बाब आ गए और इस तरह एक के बाद एक अव्वल-उल-अमान (शुरू में ईमान लाने वाले) ग़ुलाम आते चले गए। ये वो लोग थे जो इन रईसों या उनके आबा-ए-अकरम (पूर्वजों) के ग़ुलाम रह चुके थे। बहरहाल, रईस बैठे हुए थे। ये सारे आने वाले उनके आबा-ए-अकरम के ग़ुलाम थे, जैसा कि मैंने बताया, और जब वे ग़ुलाम थे, तो उस वक़्त अपनी ताक़त के ज़माने में ये लोग उन पर सख़्त तरीन ज़ुल्म किया करते थे। हज़रत उमर ने हर ग़ुलाम की आमद पर उसका इस्तकबाल किया। यानी, वो जो ग़ुलाम थे, माज़ी के ग़ुलाम और आज के मुअज़्ज़ज़ (सम्मानित) लोग थे, उनका मुअज़्ज़ज़ के तौर पर इस्तकबाल किया।

हज़रत मुसह-ए-मवऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) लिखते हैं कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हर ग़ुलाम की आमद पर उसका इस तरह इस्तकबाल किया जैसे रईसों का करते हैं और रईसों से कहा, "आप ज़रा पीछे हो जाएँ।" रईस महफ़िल में आगे बैठे होते थे। जब ये पुराने ईमान लाने वाले आते थे, तो आप इन रईसों को, जो मक्का के रईस थे, कहते, "ज़रा पीछे हट जाओ, इनको आगे बैठने दो।" यहाँ तक कि वे नौजवान रईस, जो हज़रत उमर से मिलने आए थे, वे हटते-हटते दरवाज़े तक पहुँच गए। उस ज़माने में कोई बड़े-बड़े हॉल तो होते नहीं थे, एक छोटा सा कमरा होगा, और चूंकि वे सब उसमें समा नहीं सकते थे, इसलिए पीछे हटते-हटते रईसों को जूतियों में बैठना पड़ा।

जब मक्का के वे रईस जूतियों में जा पहुँचे और उन्होंने अपनी आँखों से देखा कि किस तरह एक के बाद एक मुसलमान ग़ुलाम आया और उसे आगे बिठाने के लिए इन लोगों को या रईसों को पीछे हटने का हुक्म दिया गया, तो उनके दिल को सख़्त चोट लगी। हज़रत मुसह-ए-मवऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) लिखते हैं कि ख़ुदा तआला ने भी उस वक़्त कुछ ऐसे सामान पैदा कर दिए कि एक के बाद एक कई ऐसे मुसलमान आ गए जो किसी ज़माने में काफ़िरों के ग़ुलाम रह चुके थे। अगर एक बार ही वे रईस पीछे हटते, तो उन्हें एहसास भी न होता, मगर चूंकि बार-बार उन्हें पीछे हटना पड़ा, इसलिए वे इस बात को बर्दाश्त न कर सके और उठकर बाहर चले गए। बाहर निकलकर वे एक-दूसरे से शिकायत करने लगे कि देखो, आज हमारी कैसी ज़िल्लत और रुस्वाई हुई है। एक-एक ग़ुलाम के आने पर हमें पीछे हटाया गया, यहाँ तक कि हम जूतियों में जा पहुँचे।

इस पर उनमें से एक नौजवान बोला, "इसमें किसका कसूर है? उमर का है या हमारे बाप-दादा का है? अगर तुम सोचो, तो मालूम होगा कि इसमें हज़रत उमर का तो कोई कसूर नहीं। यह हमारे बाप-दादा का कसूर था, जिसकी आज हमें सज़ा मिली, क्योंकि जब ख़ुदा ने अपना रसूल भेजा, तो हमारे बाप-दादा ने मुख़ालफ़त की, मगर इन ग़ुलामों ने उसे क़ुबूल किया और हर क़िस्म की तकलीफ़ को ख़ुशी से बर्दाश्त किया। इसलिए आज अगर हमें महफ़िल में ज़लील होना पड़ा है, तो इसमें उमर का कोई कसूर नहीं, हमारा अपना कसूर है।"

यह सुनकर दूसरे कहने लगे, "हमने यह तो मान लिया कि यह हमारे बाप-दादा के कसूर का नतीजा है, मगर क्या इस ज़िल्लत के दाग को दूर करने का कोई ज़रिया भी है या नहीं?" इस पर सबने आपस में मशवरा किया कि "हमारी समझ में तो कोई बात नहीं आती। चलो, हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से ही पूछ लेते हैं कि इसका

क्या इलाज़ है।" इसलिए, वे हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पास आए और कहने लगे कि "आज जो कुछ हमारे साथ हुआ है, उसको आप भी ख़ूब जानते हैं और हम भी ख़ूब जानते हैं।" हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाने लगे, "माफ़ करना, मैं मजबूर था, क्योंकि ये वो लोग थे जो रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की महफ़िल में मुअज़्ज़ज़ (सम्मानित) थे। शायद तुम्हारे ग़ुलाम होंगे, लेकिन हज़रत अनवर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की महफ़िल में ये लोग मुअज़्ज़ज़ थे, इसलिए मेरा भी फ़र्ज़ था कि मैं उनकी इज़्ज़त करता।" उन्होंने कहा, "हम जानते हैं। यह हमारे ही कसूर का नतीजा है, लेकिन क्या इस आर (अपमान) को मिटाने का भी कोई ज़रिया है?"

हज़रत मुसह-ए-मवऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि "हम लोग तो उस ज़माने में, आज कल जो हम यहाँ बैठे हैं, उसका अंदाज़ा नहीं कर सकते। आज कल इसका अंदाज़ा लगाना बहुत मुश्किल है कि वो लोग जो मक्का के रईस थे, उन्हें मक्का में किस क़दर असर-ओ-रुसुख़ (प्रभाव) हासिल था। लेकिन हज़रत उमर उनके ख़ानदानी हालात को बख़ूबी जानते थे। आप मक्का में पैदा हुए थे और मक्का में बड़े हुए थे, इसलिए हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) जानते थे कि इन नौजवानों के बाप-दादा किस क़दर इज़्ज़त रखते थे। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) जानते थे कि कोई शख़्स उनके सामने आँख उठाकर देखने की भी जुर्रत नहीं कर सकता था। आप जानते थे कि उन्हें किस क़दर रअ़ब (दबदबा) और वक़ार (प्रतिष्ठा) हासिल था।"

जब उन्होंने यह बात कही, तो हज़रत उमर के सामने एक-एक करके ये समस्त वाक़िआत आ गए और आप पर रक़्क़त (नरमी) तारी हो गई। उस वक़्त आप ग़लबा-ए-रक़्क़त की वजह से बोल भी न सके। सिर्फ़ आपने हाथ उठाया और उत्तर की तरफ़ उंगली से इशारा किया, जिसका यह मतलब था कि उत्तर में, यानी शाम में, कुछ इस्लामी जंगें हो रही हैं। अगर तुम इन जंगों में शामिल हो जाओ, तो मुमकिन है कि इसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) हो जाए।

इसलिए, वे वहाँ से उठे और जल्द ही इन जंगों में शामिल होने के लिए चल पड़े। तारीख़ बताती है कि वे समस्त रईस-ज़ादे जितने थे, उनमें से एक भी शख़्स ज़िंदा वापस नहीं आया, सब उसी जगह शहीद हो गए और इस तरह उन्होंने अपने ख़ानदानों के नाम से ज़िल्लत के दाग़ को मिटा दिया।

(माख़ूज़: तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 11, पृष्ठ 97-99)

जंग-ए-यरमूक में बयान किया जाता है कि जंग-ए-यरमूक में इन रईसों ने क़ाबिल-ए-तारीफ़ जुर्रत और जानिफ़िशानी (बलिदान) का मुज़ाहिरा किया। इसलिए, हज़रत मुसह-ए-मवऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बयान फ़रमाया है कि जब जंग ख़त्म हुई, तो मुसलमानों ने ख़ास तौर पर अकरमा और उनके साथियों को तलाशा, तो क्या देखा कि इन आदमियों में से बारह शदीद (गंभीर) ज़ख़्मी हैं। उनमें एक अकरमा भी थे।

एक मुसलमान सिपाही उनके पास आया और अकरमा की हालत देखी। बड़ी ख़राब थी। उसने कहा: "ऐ अकरमा! मेरे पास पानी की छगल (मशक़) है, तुम कुछ पानी पी लो।" अकरमा ने मुँह फेरकर देखा, तो पास ही हज़रत अब्बास के बेटे हज़रत फ़ज़ल ज़ख़्मी हालत में पड़े हुए थे। अकरमा ने उस मुसलमान से कहा, "मेरी ग़ैरत यह बर्दाश्त नहीं कर सकती कि जिन लोगों ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की उस वक़्त मदद की, जब मैं आपका शदीद मुख़ालिफ़ (विरोधक) था, वो और उनकी औलाद प्यास की वजह से मर जाए और मैं पानी पीकर ज़िंदा रहूँ। एक-दूसरे की ख़ातिर क़ुर्बानी का एक नया जज़्बा उनमें पैदा हो गया था। इसलिए, पहले उन्हें, यानी हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास को, पानी पिला लो। अगर कुछ बच जाए, तो फिर मेरे पास ले आना।"

वह मुसलमान हज़रत फ़ज़ल के पास गया। उन्होंने अगले ज़ख़्मी की तरफ़ इशारा किया और कहा, "पहले इसे पानी पिलाओ। यह मुझसे ज़्यादा मुस्तहक़ (हक़दार) है।" वह उस ज़ख़्मी के पास गया, तो उसने अगले ज़ख़्मी की तरफ़ इशारा करके कहा, "वह मुझसे ज़्यादा मुस्तहक़ है, पहले उसे पानी पिलाओ।" इस तरह वह जिस सिपाही के पास जाता, वह उसे दूसरे के पास भेज देता और कोई न पीता। जब वह आख़िरी ज़ख़्मी के पास पहुँचा, तो वह फ़ौत (मृत्यु) हो चुका था। वह वापस दूसरे की तरफ़ आया, यहाँ तक कि अकरमा तक पहुँचा, मगर वे सब फ़ौत हो चुके थे।

(हर अहमदी औरत अहमदियात की सदाक़त का एक ज़िंदा निशान है, अनवार-ए-उलूम, भाग 26, पृष्ठ 230-231)

अल्लाह की ओर दावत और बड़े बुतों का विध्वंस दावत-ए-इल्लल्लाह (ईश्वर की ओर बुलाने) के लिए और कुछ बड़े बुतों के विध्वंस (नाश) के लिए हज़रत अनवर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने दस्ते (छोटे दल) मुक़र्रर फ़रमाए थे। उनको रवाना फ़रमाया। इसका ज़िक्र इस तरह मिलता है कि फ़तह-ए-मक्का के बाद नबी अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने मुख़्तलिफ़ मक़ामात की ओर दस्ते भेजे। बुनियादी तौर पर ये जंग-ओ-क़िताल (युद्ध) के लिए नहीं थे। उनका मक़सद दावत-ए-इल्लल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना था और कुछ जगहों पर नसब (स्थापित) किए हुए बुतों को गिराना था, जो तौहीद (ईश्वर की एकता) पर ईमान लाने में एक रोक थे। जिससे फ़र्ज़ी (काल्पनिक) और मसनूई (कृत्रिम) ख़ौफ़ लोगों के दिलों में समाया हुआ था और उनका यह तसव्वुर (सोच) ख़ुदा-ए-वाहिद-ओ-यग़ाना (एक और अकेले ईश्वर) पर ईमान लाने में रोक बना हुआ था।

अहले-अरब की अधिकतर के दिलों में तीन बुतों या देवियों की बहुत अज़्मत (महानता) थी। उनके नाम ये हैं: लात, मनात और उज़्ज़ा।

लात: यह देवी ताइफ़ में थी। समस्त अरब में उसकी अज़्मत और तक़्रीर (सम्मान) थी। लोग उसका नाम लेकर क़सम खाया करते थे और उस पर चढ़ावे चढ़ाते थे। अम्र बिन लुहय, जो अरबों में बुत-परस्ती का बानी (संस्थापक) समझा जाता है, उसने लोगों के दिलों में यह ख़्याल पैदा कर दिया कि अल्लाह तआला (अनुल्लाहु अल-ऐज़ु बिल्लाह) मौसम-ए-सर्मा (सर्दी) में ताइफ़ में लात के पास और मौसम-ए-ग़रमा (गर्मी) का मौसम उज़्ज़ा के पास गुज़ारता है।

मनात: यह अरबों का क़दीम तरीन (सबसे पुराना) बुत था। यह समंदर के किनारे क़ुदैद में मक्का और मदीना के बीच था। अहले-अरब उसकी ताज़ीम (आदर) करते और उस पर क़ुर्बानियाँ करते थे। औस और ख़ज़रज ख़ास तौर पर उसकी इतनी ताज़ीम करते थे कि वे मनात के नाम पर एहराम (धार्मिक वस्त्र) बांधते थे। उसकी अज़्मत-ओ-ताज़ीम के पेशे-नज़र, पृष्ठ और मरवा के दरमियान सई (एक रस्म) भी नहीं करते थे। जब हज करते, तो अपने सिरों को न मुंडवाते, बल्कि वापसी पर मनात के पास आते और यहाँ सिर मुंडवाते, क़याम करते और उसके बिना अपना हज मुकम्मल न समझते थे।

उज़्ज़ा: यह क़ुरैश का सबसे बड़ा बुत था, जो नख़ला के क़रीब नसब था। उन्होंने उसके लिए एक क़ुर्बानगाह भी बनाई हुई थी, जिसमें वे अपनी क़ुर्बानियाँ करते थे। उसके नाम पर अपने लोगों के नाम रखते और उसकी क़सम खाया करते थे। अम्र बिन लुहय, जो अरबों में बुत-परस्ती का बानी समझा जाता है, उसने लोगों के दिलों में बुतों के बारे में जो ग़लत ख़्यालात शदीद तौर पर पैदा कर दिए थे, उनसे लोग इन बुतों से बहुत ख़ौफ़-ज़दा भी थे और बड़ा एहतराम करते थे, जैसा कि मैंने पहले बयान किया है। उनके ख़्याल में अल्लाह तआला (अनुल्लाहु अल-ऐज़ु बिल्लाह) मुख़्तलिफ़ मौसम इन बुतों के पास गुज़ारता था। बहरहाल, इस तरह के तसव्वुरात ने उज़्ज़ा देवी की अज़्मत को लोगों में इतना पैदा कर दिया कि जिस तरह काबा की तरफ़ हृद्य (उपहार) और नज़राने लाए जाते थे, उसी तरह वे उज़्ज़ा की तरफ़ ले जाने लगे। यह वही बुत है कि जंग-ए-उहुद के मौक़े पर अबु सुफ़ियान ने फ़तह की ख़ुशी में उसका नाम लेते हुए कहा था: "इन्ना लना अल-उज़्ज़ा व ला उज़्ज़ा लकुम" (हमारे लिए उज़्ज़ा है और तुम्हारा कोई उज़्ज़ा नहीं)।

यूँ तो अहले-अरब आम तौर पर इन तीनों बुतों की ताज़ीम करते थे, अलबत्ता उज़्ज़ा क़ुरैश के लिए मख़सूस (विशेष) था। लात बनू सक़ीफ़ और मनात औस और ख़ज़रज के लिए ख़ास था। अहले-अरब के तसव्वुर के मुवाफ़िक़, ये तीनों मोअन्नस (स्त्रीलिंग) थे, यानी देवियाँ थीं।

(अल-लु'लु' अल-मकन, सीरत इंसाइक्लोपीडिया, भाग 9, पृष्ठ 202-203, 207, दार-ए-सलाम) (अल-लु'लु' अल-मकन, सीरत इंसाइक्लोपीडिया, भाग 1, पृष्ठ 346, दार-ए-सलाम) (तसव्वुरात-ए-अरब क़बाइल, लेखक उबैदुल्लाह क़ुदसी, पृष्ठ 52-55) (इब्न हिशाम, पृष्ठ 77, दारुल-कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)(सहीह बुख़ारी, किताब अल-जिहाद, बाब मा युक़रहू मिन अल-तनाज़ु'..., हदीस 3039)

क़ुरआन करीम ने इन तीनों का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया है

اَفَرَءَيۡتُمُ اللّٰتَ وَالۡعُزّٰى ﴿۲۰﴾ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الۡاُخۡرٰى ﴿۲۱﴾ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الۡاُنۡثٰى ﴿۲۲﴾ تِلۡكَ اِذًا قِسۡمَةٌ ضِيۡزٰى ﴿۲۳﴾ اِنۡ هِىَ اِلَّاۤ اَسۡمَآءٌ سَمَّيۡتُمُوۡهَاۤ اَنۡتُمۡ وَاٰبَآؤُكُمۡ مَّاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنۡ سُلۡطٰنٍؕ اِنۡ يَّتَّبِعُوۡنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهۡوَى الۡاَنۡفُسُۚ وَلَقَدۡ جَآءَهُمۡ مِّنۡ رَّبِّهِمُ الۡهُدٰى ﴿۲۴﴾

तुम भी ज़रा लात और उज़्ज़ा का हाल सुनाओ। क्या उनकी भी यही शान है और तीसरे मनात का भी जो उनके अलावा है। क्या तुम्हारे लिए तो बेटे हैं और अल्लाह के लिए बेटियाँ। यह तो बहुत ही नाकाफी बँटवारा है। यह तो कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादाओं ने रख लिए हैं वरना इनमें हकीकत कुछ भी नहीं। अल्लाह ने इन मूर्तियों के लिए कोई दलील नहीं उतारी। वह सिर्फ एक वहम की और ख्वाहिश नफ्सानी की पैरवी कर रहे हैं। और उनके पास उनके रब की तरफ से हिदायत

आ चुकी है मगर फिर भी नहीं समझते।

बहरहाल जैसा कि बयान हुआ है कि फतह-ए-मक्का के फौरन बाद नबी-ए-अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने मूर्तियों के उन ठिकानों को मिसमार (तोड़ने) करने का इरशाद फ़रमाया ताकि लोगों के दिलों से उनके फर्जी खौफ और अज़मत का ख्याल जाता रहे और यह दूरअंदेश फैसला बहुत बरकत वाला साबित हुआ क्योंकि उनके इंहिदाम (विध्वंस) से लोगों के दिलों में उनका झूठा खौफ और रौब जाता रहा और उन्हें यकीन होने लगा कि उस खुदा-ए-वाहिद-ओ-यगाना (एक और अद्वितीय ईश्वर) का तसव्वुर ही सही है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने पेश किया है।

इन मूर्तियों को किस तरह गिराया गया, किस तरह यह जगहें मिसमार की गईं और इसका फिर क्या रिएक्शन हुआ। शुरुआत में कोई मुखालिफत हुई कि नहीं, इसके कुछ थोड़े से वाकिआत जो हैं, यह इंशा अल्लाह आगे बयान करूँगा।

नमाज़ के बाद में दो जनाजा-ए-गैब (अनुपस्थित जनाजे) भी पढ़वाऊँगा जिनमें से एक हैं श्रीमान चौधरी अब्दुल ग़फ़ूर साहिब इब्ने चौधरी गुलाम कादिर साहिब जो जाम शोरो हैदराबाद के हैं। पिछले दिनों बानवे साल की उम्र में उनका इंतकाल हुआ है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। ज़मींदार खानदान से उनका ताल्लुक था। बुड्ढा कोट से 1900 के ओवायल (शुरुआत) में कोट अहमदिया शिफ्ट हुए। आपके वालिद ने सिलसिला और खिलाफ़त से मोहब्बत के बाइस आपको अला दीनी और दुनयावी तालीम के लिए 1942 में कादियान भेजा जहाँ चौधरी साहिब ने हिज्रत-ए-पाकिस्तान तक तालीम हासिल की और वहाँ बुज़ुर्गान और असहाब की नेक सोहबत से फैजयाब हुए। यहाँ आने के बाद फिर बाकी तालीम चौधरी ग़फ़ूर साहिब ने चिनियोट और रबवाह में हासिल की। फिर बाद में कराची से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की और 1993 में उनकी रिटायरमेंट हुई। इसके बाद उन्होंने जिंदगी वक्फ की। युगांडा में दो साल तक एक प्रोजेक्ट पर खिदमत की तौफीक पाई। अहमदियत के बड़े दिलेर सपूत थे। खिदमत-ए-खल्क करने वाले, बहुत वसीउल क़ल्ब (उदार हृदय) थे। बिला इम्तियाज सब की माली जरूरतों को पूरा करने के लिए कोशिश करते। माली कुरबानी में पेश पेश रहते। क़ायदे इलाका रहे हैं। अंसारुल्लाह में भी नुमायाँ खिदमात अंजाम देते रहे। लंबा अरसा तक सिक्रेटरी उमूरे आम्मा हैदराबाद भी रहे। हज़रत खलीफतुल मसीहुल राबे (रहमतुल्लाह अलैह) ने उनको अमीर जिला नवाबशाह और नौशहरो फिरोज मुकर्रर फ़रमाया था जिस की जिम्मेदारी आपने बड़ी मेहनत से अदा की। मरहूम मूसी (वसीयत करने वाले) थे। पसमांदगान (पीछे छूटने वालों) में तीन बेटे और पाँच बेटियाँ शामिल हैं।

उनकी एक बेटी हमीरा साहिबा कहती हैं कि खिदमत-ए-खल्क को यह अपना बैंक बैलेंस कहा करते थे और अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल का ज़रिया यकीन रखते थे। बेशुमार अहमदी और गैर-अहमदी ऐसे हैं कि आपके ज़रिए उनकी हाजतें पूरी हुईं। बिला इम्तियाज मुसाफिरों, मरीजों, लाचारों की माली जरूरतों का ख्याल रखते थे और बड़ी-बड़ी रकमें भी दे दिया करते थे। सिलसिले की खातिर माली कुरबानी का जज़्बा भी गालिब था। जब हज़रत खलीफतुलमसीह सालिस (रहमतुल्लाह अलैह) ने सद साला जुबली मनाने के लिए माली तहरीक फरमाई तो फौरन लब्बैक कहते हुए अगले ही रोज रबवाह में अपने मकान को फरोख्त (बेच) करके उसकी सारी रकम इस मद में दे दी। हज़रत खलीफतुलमसीह सालिस ने खिलाफ़त के बाद 1966 में जब सिंध का दौरा किया तो हैदराबाद से उनके घर कोट अहमदिया में भी गए। 1981 में क़स्र-ए-खिलाफ़त (खिलाफ़त का महल) की रबवाह में जब तामीर हो रही थी और उस वक्त उनको हुकूमत की तरफ से किसी प्रोजेक्ट के लिए अफ्रीका भेजा जा रहा था और वह उनके लिए बड़ा अच्छा मौका था। जब यह हज़रत खलीफतुलमसीह सालिस (रहमतुल्लाह अलैह) की खिदमत में मशवरे के लिए हाजिर हुए तो उन्होंने कहा कि वहाँ नहीं जाना। उसे छोड़ो, यहाँ मेरा क़स्र-ए-खिलाफ़त बन रहा है इसकी छतें वगैरह पड़ रही हैं इसकी निगरानी करो। चुनाँचि अगले ही रोज उन्होंने काम संभाल लिया और वहीं रहे लेकिन अल्लाह तआला ने भी फिर उनको नवाजा। इसके बाद जब वह वहाँ रुख्सत को पूरा करके वापस गए तो गवर्नमेंट की तरफ से वही कॉन्ट्रैक्ट उनको दोबारा मिल गया और कहते थे यह महज खिलाफ़त की बरकत से हुआ है।

हज़रत खलीफतुलमसीह सालिस (रहमतुल्लाह अलैह) और राबे (रहमतुल्लाह अलैह) से भी बड़ा ताल्लुक था। वह भी उनके हाँ आते थे। घर में भी रहे। इसी तरह जब मैं वहाँ पाकिस्तान में था तो मुझे भी उनके घर जाने का मौका मिला और उनके घर ठहरने का भी मौका मिला। बड़ी मेहमाननवाजी करने वाले थे। बल्कि एक दफा तो मुझे रात के वक्त सफर करना पड़ा। सिंध में हालात भी ठीक नहीं थे तो उन्होंने कहा मैं तुम्हें रात को लेकर जाऊँगा, बारिश भी हो रही थी। तूफानी बारिश थी। सड़कें पानी में डूबी हुई थीं लेकिन बहरहाल यह ले गए। हम रात को मंजिल पर पहुँचे जहाँ मुझे पहुँचना था। इसके बाद मैंने उन्हें कहा आप रात यहीं गुज़ारें। सुबह चले जाइए। अकेले न जाइए तो कहते हैं नहीं। और उसी वक्त अपनी गाड़ी में बैठे और रात को ही रवाना हो गए। बड़े दिलेर और बहादुर इंसान थे। असीरान-ए-राहे मौला (मौला के रास्ते के कैदियों) के लिए भी आपकी खिदमात काबिले कद्र हैं। जेलों में जाके इंतजामिया से राबता करके उनके लिए सुविधाओं का इंतजाम किया करते थे।

इंसानियत की खिदमत का जज़्बा कोट-कोट कर उनमें भरा हुआ था। अज़ीज रिश्तेदारों का, गरीबों मोहताजों का ख्याल रखते। उनकी बेटी कहती हैं बड़ी खिदमत करते। निजाम-ए-खिलाफ़त से गहरी मोहब्बत रखते थे। खलीफा-ए-वक्त की हर आवाज पर लब्बैक कहने वाले थे और उनकी रोजाना की गुफ्तगू का हिस्सा ही खिलाफ़त होती थी। उनके जो गैर-अहमदी मिलने वाले हैं वह भी उनकी नेकियों का बहुत जिक्र करते हैं। उन पर भी उन्होंने एक अच्छा असर, नेक असर छोड़ा हुआ था। हल्का-ए-अहबाब उनका बहुत वसी था और हर जगह एक अहमदी की हैसियत से पहचाने जाते थे। गवर्नमेंट के अफसरान, सिंध के जितने बड़े-बड़े सियासी खानदान थे उनसे उनके अच्छे ताल्लुकात थे और उनको अक्सर वह जमाअत का छिपा हुआ कुरआन करीम पेश किया करते थे और खुल कर जमाअत का तआरुफ कराते बल्कि मुमकिन होता तो उनको रबवाह भी लेकर आते। अल्लाह तआला उनसे मगफिरत और रहम का सुलूक फरमाए। उनके बच्चों को भी उनकी नेकियाँ जारी रखने की तौफीक अता फरमाए।

दूसरा जिक्र श्रीमान मुहम्मद अली साहिब। चक 275 करतारपुर फैसलाबाद का है। यह भी पिछले दिनों सत्तर साल की उम्र में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाह तआला के फजल से मूसी (वसीयत करने वाले) थे। उनके भी तीन बेटे और पाँच बेटियाँ हैं। एक बेटे उनके लुसाका जाम्बिया में मुबल्लिग-ए-सिलसिला हैं जो आजकल यहाँ जलसा सालाना यूके में शुमूलियत के लिए आए हुए हैं। इस वजह से वालिद के जनाजे में भी शामिल नहीं हो सके।

यही ताहिर अहमद सैफी साहिब (मुबल्लिग-ए-सिलसिला) कहते हैं कि वालिद साहिब के खानदान में अहमदियत का आगाज खिलाफ़त-ए-सानिया (द्वितीय खिलाफ़त) के इब्तिदाई (शुरुआती) ऐयाम में हुआ जब आपके दादा मूसा साहिब ने अहमदियत कबूल करके जमाअत में शुमूलियत इख्तियार की। मरहूम सोम-ओ-सलात (रोज़े और नमाज़) के पाबंद, तहज्जुदगुज़ार, खुशमिज़ाज, खामोश तबीयत, मिलनसार, खिदमत-ए-खल्क के जज़्बे से सरशार, खंदा पेशानी से पेश आने वाले नेक और मुख्लिस इंसान थे। खिलाफ़त से बेइंतिहा इश्क था। हर काम के लिए पहले खलीफा-ए-वक्त को खत लिखकर दुआ के लिए कहते। जमाअती और दीनी उमूर में खामोशी से हिस्सा लेते और जहाँ तक मुमकिन होता हत्तल वसअ अपनी हैसियत के मुताबिक माली कुरबानी में भी हिस्सा लेते। जब एमटीए (मुस्लिम टेलीविजन अहमदिया) का आगाज हुआ है उस वक्त उनके घर टीवी नहीं था तो एमटीए का आगाज होते ही फौरी तौर पर टीवी घर में ले आए कि खलीफा-ए-वक्त की आवाज को बराहे रास्त सुनना है। कहते हैं मुझे नहीं याद पड़ता कि खलीफा-ए-वक्त की तरफ से कोई ऐसी तहरीक हो जिसमें वालिद साहिब ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा न लिया हो। गैरों से भी उनका बड़ा शफकत का सुलूक था। फैक्ट्री में जहाँ यह मुलाजिमत करते थे वहाँ बहुत सारे गैर-अहमदियों को उन्होंने फैक्ट्री में मुलाजिमत दिलवाई लेकिन जैसा कि आदत है गैर-अहमदियों की बुग्ज़ों का इतना ज़र्फ (सहनशीलता) नहीं होता तो उसके बावजूद कि उन्होंने उनसे नेकी की उन्होंने लोगों की बातों में आकर मालिकान से शिकायत की और जोर दिया कि उनको नौकरी से निकाला जाए। बहरहाल उनको नौकरी से निकाल दिया गया लेकिन उन्होंने कोई शोर-शराबा नहीं किया। अल्लाह तआला के हुज़ूर में अपनी फरियाद की और कुछ अरसे बाद फैक्ट्री के मालिक ने दोबारा उनको बुलाया और वहीं उसी पोजीशन पर दोबारा उनको बहाल कर दिया लेकिन जिन्होंने ऐसा सुलूक किया था उन्होंने उनसे बदतहजीबी का नहीं बल्कि उनसे भी नेक सुलूक किया और उनके फिर भी काम करते रहे। कहते हैं तबलीग से ज्यादा उनका हुस्न-ए-सुलूक (अच्छा व्यवहार) था जिस की वजह से फैसलाबाद शहर के आठ अफराद ने अहमदियत कबूल की। अल्लाह तआला उनसे मगफिरत और रहम का सुलूक फरमाए -और बच्चों को भी उनकी नेकियाँ जारी रखने की तौफीक अता फरमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल, 29 अगस्त 2025, पृष्ठ 2 से 6)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

मिसल है, बल्कि वह ख़ुद अपनी कम-मायगी का हमेशा इक़रार करते रहे हैं और क़ुरआन शरीफ़ की तारीफ़ करते हैं। दूसरा, उन लोगों की किताबों में मअनी अल्फ़ाज़ के ताबे हो कर चलता है। सिर्फ़ अल्फ़ाज़ जोड़े हुए होते हैं। क़ाफ़िए के वास्ते एक लफ़्ज़ के मुक़ाबिल दूसरा लफ़्ज़ तलाश किया जाता है और कलाम में हिक्मत और मआरिफ़ का लिहाज़ नहीं होता और क़ुरआन शरीफ़ में इल्तिजाम है हक़ और हिक्मत का। अस्ल में इस बात का निभाना कि हक़ और हिक्मत के कलिमात के साथ क़ाफ़िया भी दुरुस्त हो, यह बात ताईद-ए-इलाही से हासिल होती है, वर्ना इंसानों के कलाम ऐसे होते हैं जैसाकि हरीरी वग़ैरह।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 सफ़्हा 84 से 85, एडिशन 2018, कादियान)

पृष्ठ 1 का शेष

मुल्क में जा रहे हैं। अब, इसके बावजूद कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) इस्लाम के तीव्र दुश्मन थे, इसके बावजूद कि वह खुद मुसलमानों को मारने पर तैयार रहते थे, रात के अंधेरे में उस सहाबिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) से यह उत्तर सुनकर कि 'हम वतन छोड़ रहे हैं इसलिए कि तुम और तुम्हारे भाई हमारा यहाँ रहना पसंद नहीं करते और हमें ख़ुदा-ए-वाहिद की इबादत आज़ादी से नहीं करने देते', हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपना मुँह दूसरी तरफ फेर लिया और उस सहाबिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) का नाम लेकर कहा: अच्छा जाओ, अल्लाह तुम्हारा हाफिज़ हो। ऐसा लगता है हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) पर रिक़्त (कोमलता) का ऐसा जज़्बा आया कि आपने ख्याल किया कि अगर मैंने दूसरी तरफ मुँह नहीं किया तो मुझे रोना आ जाएगा। इतने में उस सहाबिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) के खावंद भी आ गए। वह समझते थे कि उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) इस्लाम के तीव्र दुश्मन हैं। उन्होंने जब आपको वहाँ खड़ा देखा तो ख्याल किया कि यह हमारे सफ़र में कोई रुकावट पैदा न कर दें। उन्होंने अपनी बीवी से दरयाफ़्त किया कि यह यहाँ कैसे आ गया? उसने बताया कि वह इस तरह आया था और उसने प्रश्न किया था कि तुम कहाँ जा रही हो? उन्होंने कहा कि यह कोई शरारत न कर दे। उस सहाबिया (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: ऐ मेरे चचा के बेटे (अरब औरतें आम तौर पर अपने खावंदों को चचा का बेटा कहा करती थीं), तुम तो यह कहते हो कि वह कहीं कोई शरारत न कर दे, मगर मुझे तो ऐसा लगता है कि उसने किसी दिन मुसलमान हो जाना है क्योंकि जब मैंने कहा: उमर! हम इसलिए मक्का छोड़ रहे हैं कि तुम और तुम्हारे भाई हमें ख़ुदा-ए-वाहिद की इबादत आज़ादी से नहीं करने देते, तो उसने मुँह फेर लिया और कहा: अच्छा जाओ, अल्लाह तुम्हारा हाफिज़ हो। उसकी आवाज़ में कंपन था और मैं समझती हूँ कि उसकी आँखों में आँसू भर आए थे, इसलिए लगता है कि वह ज़रूर किसी दिन मुसलमान हो जाएगा।

दिन इसी तरह गुज़रते चले गए और हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) इस्लाम की बराबर सख़्ती से मुख़ालफ़त करते रहे। एक दिन उनके दिल में ख्याल पैदा हुआ कि क्यों न इस मज़हब के बानी का ही काम समस्त कर दिया जाए। और इस ख्याल के आते ही उन्होंने तलवार हाथ में ली और रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के क़त्ल के लिए घर से निकल खड़े हुए। रास्ते में किसी ने पूछा: उमर, कहाँ जा रहे हो? उन्होंने उत्तर दिया: मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मारने के लिए जा रहा हूँ। उस शख़्स ने हँसकर कहा: अपने घर की तो पहले ख़बर लो। तुम्हारी बहन और बहनोई तो इस (दीन) पर ईमान ले आए हैं। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: यह झूठ है। उस शख़्स ने कहा: तुम खुद जाकर देख लो। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) वहाँ गए। दरवाज़ा बंद था और अंदर एक सहाबी (रज़ियल्लाहु अन्हु) क़ुरआन करीम पढ़ा रहे थे। आपने दस्तक दी। अंदर से आपके बहनोई की आवाज़ आई: कौन है? उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उत्तर दिया: उमर। उन्होंने जब देखा कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) आए हैं और वह जानते थे कि आप इस्लाम के तीव्र मुख़ालिफ़ हैं तो उन्होंने उस सहाबी (रज़ियल्लाहु अन्हु) को, जो क़ुरआन करीम पढ़ा रहे थे, कहीं छुपा दिया। इसी तरह क़ुरआन करीम के अवराक़ (पन्ने) भी किसी कोने में छुपाकर रख दिए और फिर दरवाज़ा खोला। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) चूँकि यह सुनकर आए थे कि वह मुसलमान हो गए हैं, इसलिए उन्होंने आते ही दरयाफ़्त किया कि दरवाज़ा खोलने में देर क्यों की है। आपके बहनोई ने उत्तर दिया: आख़िर देर लग ही जाती है। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: यह बात नहीं, कोई ख़ास अम्र (बात) दरवाज़ा खोलने में रुकावट बनी है। मुझे आवाज़ आ रही थी कि तुम उस साबी की बातें सुन रहे थे (मुश्रिकीन-ए-मक्का रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को साबी कहा करते थे)। उन्होंने पर्दा डालने की कोशिश की लेकिन हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) को गुस्सा आया और वह अपने बहनोई को मारने के लिए आगे बढ़े। आपकी बहन अपने खावंद की मुहब्बत की वजह से दरमियान में आ गईं। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) चूँकि हाथ उठा चुके थे और उनकी बहन अचानक दरमियान में आ गईं, वह अपना हाथ रोक न सके और उनका हाथ ज़ोर से उनकी नाक पर लगा और उससे खून बहने लगा। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) जज़्बाती आदमी थे, यह देखकर कि उन्होंने औरत पर हाथ उठाया है जो अरब के तरीक़े के खिलाफ था, और फिर बहन पर हाथ उठाया है, हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बात टालने के लिए कहा: अच्छा, मुझे बताओ, तुम क्या पढ़ रहे थे? बहन ने समझ लिया कि उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अंदर नर्मी के जज़्बात पैदा हो गए हैं। उसने कहा: जाओ, तुम्हारे जैसे इंसान के हाथ में मैं वह पाक चीज़ देने के लिए तैयार नहीं। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: फिर मैं क्या करूँ? बहन ने कहा: वह सामने पानी है, नहाकर आओ, तब वह चीज़ तुम्हारे हाथ में दी जा सकती है। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) नहाए और वापस आए। बहन ने क़ुरआन करीम के अवराक़ (पन्ने), जो वह सुन रहे थे, आपके हाथ में दिए। चूँकि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अंदर एक तब्दीली पैदा हो चुकी थी, इसलिए क़ुरआनी आयात पढ़ते ही उनके अंदर रिक़्त (भावुकता) पैदा हुई और जब वह आयात ख़त्म कर चके तो बे-इख़्तियार उन्होंने कहा कि "अश्हदु अल ला इलाहा इल्लल्लाह व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह"। यह अल्फाज सुनकर वह सहाबी (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी बाहर निकल आए जो हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से डरकर छुप गए थे। फिर हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने दरयाफ़्त किया कि रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) आजकल कहाँ मुक़ीम हैं? रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) उन दिनों मुख़ालफ़त की वजह से घर बदलते रहते थे। उन्होंने बताया कि आजकल आप दार-ए-अरकम में तशरीफ़ रखते हैं। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) फौरन उसी हालत में, जबकि नंगी तलवार उन्होंने लटकाई हुई थी, उस घर की तरफ चल पड़े। बहन के दिल में शुबहा (शक) पैदा हुआ कि शायद वह बुरी नीयत से न जा रहे हों। उन्होंने आगे बढ़कर कहा: अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें उस वक़्त तक नहीं जाने दूँगी जब तक तुम मुझे इत्मिनान न दिला दो कि तुम कोई शरारत नहीं करोगे। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: मैं पक्का वादा करता हूँ कि मैं कोई फसाद नहीं करूँगा। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) वहाँ पहुँचे और दस्तक दी। रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) अंदर बैठे हुए थे, दीनी दर्स हो रहा था। किसी सहाबी (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने पूछा: कौन? हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उत्तर दिया: उमर! सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने कहा: या रसूलल्लाह! दरवाज़ा नहीं खोलना चाहिए, ऐसा न हो कि कोई फसाद करे। हज़रत हमज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) नए-नए ईमान लाए हुए थे, वह सिपाहियाना तर्ज़ के आदमी थे। उन्होंने कहा: दरवाज़ा खोल दो, मैं देखूँगा वह क्या करता है। चुनाँचि एक शख़्स ने दरवाज़ा खोल दिया। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) आगे बढ़े तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: उमर! तुम कब तक मेरी मुख़ालफ़त में बढ़ते चले जाओगे? हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: या रसूलल्लाह! मैं मुख़ालफ़त के लिए नहीं आया, मैं तो आपका गुलाम बनने के लिए आया हूँ। वह उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) जो एक घंटा पहले इस्लाम के तीव्र दुश्मन थे और रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मारने के लिए घर से निकले थे, एक पल में अला दर्जे के मोमिन बन गए। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) मक्का के रईसों में से नहीं थे लेकिन बहादुरी की वजह से नौजवानों पर आपका अच्छा असर था। जब आप मुसलमान हुए तो सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने जोश में आकर नारा-ए-तकबीर बुलंद किए। इसके बाद नमाज़ का वक़्त आया और रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने नमाज़ पढ़नी चाही तो वही उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) जो दो घंटे पहले घर से इसलिए निकला था कि रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मारे, उसने दोबारा तलवार निकाल ली और कहा: या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला का रसूल और उसके मानने वाले तो छिपकर नमाज़ें पढ़ें और मुश्रिकीन-ए-मक्का बाहर दंडनाते फिरें, यह किस तरह हो सकता है? मैं देखूँगा कि हमें ख़ाना-ए-काबा में नमाज़ अदा करने से कौन रोकता है। रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: यह जज़्बा तो बहुत अच्छा है लेकिन अभी हालात ऐसे हैं कि हमारा बाहर निकलना मुनासिब नहीं है। यह एक ग़ैर-मामूली इंक़िलाब था जो हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अंदर पैदा हुआ और तत्काल आप तीव्र दुश्मन से अला दर्जे के मोमिन बन गए।

(तफ़्सीर कबीर भाग 6 सफ़्हा 140 से 143, मतबूआ कादियान 2010)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

31 अक्टूबर 2018, बुधवार (भाग दो - अंतिम) परिवारिक मुलाकातें

इसके बाद हज़रत-ए-अनवर (ईदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़) अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए और कार्यक्रम के मुताबिक परिवारिक मुलाकातें शुरू हुईं।

आज सुबह के इस सत्र में 74 परिवारों के 395 लोगों ने अपने प्यारे आका से मुलाकात की सादत पाई।

आज मुलाकात करने वाले परिवार अमेरिका की निम्नलिखित छह जमाअतों से आए थे: ब्रुकलिन, पोटोमैक, रिचमंड, सिल्वर स्प्रिंग, साउथ वर्जीनिया, विलिंगबोरो। इसके अलावा एक अरब देश से आने वाले अहबाब ने भी मुलाकात की सादत पाई।

श्रीमान खलील अहमद साहिब, जिनका ताल्लुक न्यूयॉर्क की जमाअत ब्रुकलिन से है, मुलाकात के बाद अपने तास्सुरात बयान करते हुए कहते हैं कि हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात की खुशी में हम दो-तीन दिन से सो भी नहीं सके हैं। बच्चे हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात के लिए एक महीने से ज़्यादा अरसे से तैयारी करते रहे हैं। यह महज खुदा तआला का फ़ज़ल है जिसने हमें यह लम्हा भी दिखाया कि हमारे प्यारे खलीफा हमारी आँखों के सामने हैं।

श्रीमान असदुल्लाह मुहम्मद साहिब अमेरिका की साउथ वर्जीनिया जमाअत से अपने परिवार के साथ मुलाकात के लिए आए थे। कहते हैं कि बच्चों और परिवार के साथ यह मेरी पहली मुलाकात थी। हुज़ूर-ए-अनवर के बारे में हमने हमेशा सुना था कि हुज़ूर को अल्लाह तआला ने गैर-मामूली हाफ़िज़ा अता फ़रमाया है। आज मुलाकात में हमने अपनी आँखों से इस बात का मुशाहिदा भी कर लिया। जब मेरी अहलिया ने दुरान-ए-मुलाकात अपना तआरुफ़ अपने वालिद साहिब के नाम से करवाया तो हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि वह तो मुझे लंदन के जलसे पर मिले थे और खत भी लिखते रहते हैं। लाखों लोग खलीफा-ए-वक़्त को खत लिखते हैं और मुलाकात के लिए आते हैं, लेकिन खलीफा-ए-वक़्त का अपने उश्शाक को याद रखना गैर-मामूली और खारिक-ए-आदत अम्र नहीं तो और क्या है।

एक साहिब ज़ुबैर अख्तर साहिब अपने परिवार के हमराह न्यूयॉर्क से पाँच घंटे का सफ़र तय करके अपने आका की मुलाकात के लिए पहुँचे थे। बयान करते हैं: हम 2016 में अमेरिका आए। पाकिस्तान में हमें हुज़ूर-ए-अनवर की ज़मीनों पर काम करने का मौका मिला। दुरान-ए-मुलाकात पूरे परिवार ने महसूस किया कि हुज़ूर-ए-अनवर का चेहरा-ए-मुबारक एक खास नूर से मुनव्वर और चमकता हुआ मालूम होता है। उनके बेटे हमदान साहिब बयान करते हैं कि जब वह हुज़ूर-ए-अनवर के दफ़्तर में दाखिल हुए तो उनको ऐसा महसूस हुआ कि जैसे वहाँ कोई और ही दुनिया है, जिसको अल्फाज में बयान करना उनकी ताकत से बाहर है।

एक दोस्त मुहम्मद शाहिद साहिब ने अपने परिवार के हमराह हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात का शर्फ पाया। मौसूफ बयान करते हैं कि मुलाकात के दुरान ऐसा महसूस हुआ कि जैसे वक़्त रुक सा गया हो, इर्द-गिर्द की दुनिया ठहर गई हो और अब मुलाकात के बाद में यूँ महसूस करता हूँ जैसे दोबारा नए सिरे से इस दुनिया में वापस आया हूँ। मैंने माज़ी में अपनी एक मुलाकात में हुज़ूर-ए-अनवर से मुआनिका (गले मिलने) की दरख्वास्त की थी तो हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया था कि अभी बहुत सारे लोग मुलाकात के लिए कतारों में इंतज़ार कर रहे हैं, लिहाज़ा अभी नहीं, फिर कभी। मैंने हुज़ूर-ए-अनवर को यह बात बताई तो हुज़ूर-ए-अनवर ने इंतहाई शफ़कत फरमाते हुए मुझे मुआनिका की सादत बख्शी।

मुदस्सिर चौधरी साहिब अपनी अहलिया के साथ कई घंटों की मसाफत तय करके हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात के लिए हाज़िर हुए थे। वह कहते हैं: यह हमारी हुज़ूर-ए-अनवर से पहली मुलाकात थी। उनकी अहलिया कहने लगीं कि हुज़ूर-ए-अनवर के चेहरे-ए-मुबारक पर एक अजीब नूर है जो फौरन दिलों को- अपनी तरफ खींच लेता है और ऐसा महसूस होता है कि अल्लाह तआला के फरिश्तों ने आपको घेरा हुआ हो। हुज़ूर-ए-अनवर से मिलकर ऐसा महसूस होता है कि हमारे दिल अमन में आ गए हों और हम बस हुज़ूर-ए-अनवर का दीदार करते रहें और वक़्त थम जाए।

ब्रुकलिन जमाअत न्यूयॉर्क से आने वाले एक दोस्त मिर्जा मुहम्मद अदनान साहिब की अपने परिवार के साथ हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात थी। कहने लगे कि आज हम अपने आप को बहुत खुशकिस्मत तसव्वुर कर रहे हैं। आज हुज़ूर-ए-अनवर से हमारी पहली मुलाकात थी। दुरान-ए-मुलाकात एक बात ऐसी हुई कि जिसे मैं कभी भुला नहीं सकता। जब मैंने हुज़ूर-ए-अनवर की खिदमत में अर्ज किया कि खाकसार डॉक्टर बन रहा है, तो हुज़ूर-ए-अनवर ने मुझे एक कलम तबरुकन इनायत फरमाई और नसीहत फरमाई: आप अपना पहला नुस्खा इससे लिखें, यह आपके लिए बाबरकत होगा।

राना मुहम्मद मुहसिन साहिब ने अपने परिवार के साथ मुलाकात करने की सादत पाई। मौसूफ बयान करते हैं कि आज हमारी जिंदगी की पहली मुलाकात थी। हुज़ूर-ए-अनवर से मिलकर इस तरह महसूस हुआ जैसे मैं अंदर से तब्दील हो चुका हूँ। अब मैं एक नया अज़्म लेकर आया हूँ कि पहले से बढ़कर अच्छाई की तरफ कदम बढ़ाऊँगा। उनके बेटे बयान करते हैं कि हुज़ूर-ए-अनवर की शख्सियत ऐसी पुर-कशिश और पुर-नूर थी कि मैं तो हुज़ूर-ए-अनवर के चेहरे-ए-मुबारक का दीदार ही करता रहा। उनकी बेटी बयान करती हैं कि मेरी ख्वाहिश थी कि हुज़ूर मुझे अंगूठी इनायत फरमाएँ, लेकिन मैंने खुद कुछ कहा नहीं। जब हुज़ूर-ए-अनवर ने मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि मेरी शादी हो गई है, तो मैंने अर्ज किया कि शादी हो चुकी है। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने अज़राह-ए-शफ़कत मुझे अंगूठी अता फरमाई।

एक खातून अपने बच्चों के हमराह मुलाकात के लिए आई थीं: हज़रत खलीफतुलमसीह सालिस (रहमतुल्लाह अलैह) से मेरी 16 साल की उम्र में मुलाकात हुई थी। उसके बाद मैं आज खलीफतुल मसीह से मिली हूँ। मेरा ईमान ताज़ा हो गया है। हुज़ूर-ए-अनवर निहायत शफीक रूहानी बाप हैं। मेरे शौहर का इंतकाल हो चुका है। हुज़ूर-ए-अनवर ने अज़राह-ए-शफ़कत मेरे सारे बच्चों से बारी-बारी उनकी पढ़ाई के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया और निहायत मुहब्बत और शफ़कत के साथ उनसे बातें कीं।

मेरी बेटी फार्मेसी की तालीम हासिल कर रही है, उसने हुज़ूर-ए-अनवर से पूछा कि क्या वह ऐसी दवाई इस्तेमाल कर सकती है जिसमें गाय का गोश्त इस्तेमाल हुआ हो, जो इस्लामी तरीक़े के मुताबिक हलाल नहीं की गई?

इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: मरीज़ बिल्कुल ऐसी दवाई इस्तेमाल कर सकता है, बल्कि पाकिस्तान में कई खाँसी के शरबत मिलते हैं जिनमें अल्कोहल भी इस्तेमाल होती है। दरअसल, बीमारी के इलाज के तौर पर इस किस्म की अदविया का इस्तेमाल शरीअत ने जाइज़ ठहराया है।

एक दोस्त मुहम्मद रफीक नून साहिब कई घंटों की मसाफत तय करके अपने अहल-ए-खाना के हमराह मुलाकात के लिए आए थे। बयान करते हैं: आज हमने अपनी जिंदगी में पहली मर्तबा खलीफतुल मसीह को इंतहाई करीब से देखा। हुज़ूर से मुसाफहा किया, बातें कीं। खुशी से हमारी आँखों से आँसू रवाँ हैं। आज हम बहुत खुशनसीब लोग हैं कि खलीफा-ए-वक़्त को अपनी आँखों से देखा है।

ताहिर अहमद साहिब, जिनका ताल्लुक सेंट्रल वर्जीनिया जमाअत से है, अपने परिवार के हमराह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मुलाकात के लिए आए थे। अपने तास्सुरात बयान करते हुए कहते हैं कि जब हम मुलाकात के लिए हुज़ूर-ए-अनवर के दफ़्तर में दाखिल हुए तो हुज़ूर-ए-अनवर का चेहरा-ए-मुबारक नूर से चमक रहा था। यूँ लगता था कि जैसे अल्लाह तआला के फरिश्ते हुज़ूर के दाएँ-बाएँ खड़े हों। मौसूफ की अहलिया ने बताया कि गुज़िश्ता साल मैं मफलूज (लकवाग्रस्त) हो गई और अपनी सिहतयाबी के लिए हुज़ूर-ए-अनवर को बाकायदगी से खत लिखती थी, जिनका हुज़ूर-ए-अनवर की जानिब से मुतवातिर उत्तर भी मुहस्सिल होता था। अब खुदा के फजल से मैं हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआ के नतीजे में चमत्कारना तौर पर बहुत हद तक सिहतयाब हो चुकी हूँ। दुरान-ए-मुलाकात जब उनके बेटे ने हुज़ूर-ए-अनवर से अपनी वालिदा की सिहतयाबी के लिए दुआ की दरख्वास्त की तो हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: इनको कुछ नहीं है और यह बिल्कुल ठीक हो जाएँगी। मौसूफा ने इस पर कहा कि इस तरह हुज़ूर-ए-अनवर ने मुझे मेरी मुकम्मल सिहत की खुशखबरी पहले ही दे दी है। मुझे पुख्ता यकीन है कि अब बीमारी के जो थोड़े बहुत असरात बाकी रह गए थे, वह भी अब खत्म हो जाएँगे। इंशा अल्लाहुल अज़ीज़।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम तीन बज कर चालीस मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मसजिद बैतुर रहमान तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-ज़ोहर व अस्र जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

नेशनल आमिला लज्ना इमाइल्लाह अमेरिका की मुलाकात

आज कार्यक्रम के मुताबिक नेशनल मजलिस-ए-आमिला लज्ना इमाइल्लाह यूएसए की हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग थी।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ साढ़े छह बजे मीटिंग रूम में तशरीफ़ लाए और नेशनल मजलिस-ए-आमिला लज्ना इमाइल्लाह यूएसए की हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग शुरू हुई।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और मीटिंग का आगाज हुआ।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जनरल सेक्रेटरी लज्ना इमाइल्लाह से दरयाफ़्त फ़रमाया कि कुल कितनी मजालिस हैं? और क्या सारी मजालिस अपनी माहाना रिपोर्ट्स भजवाती हैं?

इस पर जनरल सेक्रेटरी ने अर्ज किया कि कुल 74 मजालिस हैं और अलहमदुलिल्लाह समस्त मजालिस अपनी रिपोर्ट्स बाकायदगी से भजवाती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस्तेफसार फ़रमाया कि इन मजालिस की रिपोर्ट्स पर फीडबैक कौन देता है? मुताल्लिका शोबा की सेक्रेटरी फीडबैक देती हैं या सदर साहिबा?

इस पर जनरल सेक्रेटरी ने अर्ज किया कि मुताल्लिका शोबा की सेक्रेटरीज भी और सदर साहिबा भी फीडबैक देती हैं।

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तेफसार पर सदर साहिबा ने अर्ज किया कि उनका दफ़्तर तो वहाँ मौजूद है, लेकिन वह घर से ही काम करती हैं। लेकिन जब प्रोग्रामज वगैरह का इनिकाद होता है तो उस वक्त दफ़्तर का इस्तेमाल होता है। और नाइब सदर भी ऑफिस में काम करती हैं।

* सेक्रेटरी तालीम ने अपने शोबे की रिपोर्ट देते हुए अर्ज किया कि क़ुरआन करीम में हम सूरतुन निसा पढ़ रहे हैं और निस्फ़ रुकू मअ तर्जुमा पढ़ाया जाता है। नाज़िरा को बेहतर करने के लिए भी काम हो रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़्त फरमाने पर सेक्रेटरी तालीम ने बताया कि हमने 'कश्ती-ए-नूह' को निसाब में रखा है। इजलासात में भी इसके हिस्से पढ़े जाते हैं। एक इम्तिहान भी रखा हुआ है, जिसमें 64 फीसद लज्ना शामिल होती हैं।

सेक्रेटरी तालीम ने अर्ज किया कि इस महीने हमने लफ़्ज़ी तर्जुमा-ए-कुरआन भी शुरू किया है। यह हमने अल-इस्लाम वेबसाइट से लिया, जो कि अंसारुल्लाह यूके ने तैयार किया था। यह बहुत फायदेमंद है।

* इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी तरबियत से दरयाफ़्त फ़रमाया कि उनका साल का क्या मंसूबा है और अब तक उसमें कितनी कामयाबी हुई है?

इस पर सेक्रेटरी तरबियत ने अर्ज किया कि हम वर्कबुक पर काम कर रहे हैं, जिसमें हर महीने मुख्तलिफ मज़ामीन होते हैं। इन मज़ामीन में शादी, बच्चों की तरबियत, माली कुरबानी की अहमियत, नमाज़ और इस्तिक़ामत वगैरह के मज़ामीन शामिल होते हैं। इसके अलावा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के खुतबात को सुनने की तरफ तवज्जो दिलाने के लिए भी खास कोशिश कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि बाज़ खुतबात वगैरह को डिस्कस भी करते हैं?

सेक्रेटरी तरबियत ने अर्ज किया कि जी हुज़ूर, बाज़ मजालिस अपने प्रोग्रामों में डिस्कशन भी करती हैं, बाज़ खास पॉइंट्स लेकर उस पर बात करती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस्तेफसार फ़रमाया कि आप हर खुत्बे के बाद उसमें से प्रश्नात तैयार करके लज्ना को देती हैं?

इस पर सेक्रेटरी तरबियत ने अर्ज किया कि बाज़ मजालिस में लोकल सतह पर प्रश्नात तैयार होते हैं, लेकिन अभी तक नेशनल लेवल पर हमने शुरू नहीं किए। लेकिन नेशनल लेवल पर भी किया जा सकता है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: नेशनल लेवल पर भी करें और लोकल मजालिस में भी करें। पहले वह प्रश्नात खुद पढ़ें और फिर उन प्रश्नात को फैमिली मेंबर्स के साथ डिस्कस करें।

सेक्रेटरी तरबियत ने अर्ज किया कि इसके अलावा हम बच्चों की तरबियत पर भी तवज्जो दे रहे हैं। इस हवाले से हमने गुज़िश्ता साल एक किताब तैयार की है। फिर माओं से बराह-ए-रास्त राबता करके भी बच्चों की तरबियत और खास तौर पर नमाज़ के क़याम के हवाले से तवज्जो दिलाई जाती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़्त फरमाने पर नेशनल सेक्रेटरी तरबियत ने बताया कि हमने नमाज़ के हवाले से सर्वे किया है कि कुल कितनी लज्ना नमाज़ बाकायदगी से अदा करती हैं। सर्वे के मुताबिक 6 हज़ार में से 4100 लज्ना का उत्तर आया था और उनमें से 80 फीसद लज्ना नमाज़ अदा कर रही हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि यह तो लज्ना की संख्या, बाकी घरवालों और बच्चों के मुताल्लिक क्या रिपोर्ट है कि वह भी नमाज़ अदा करते हैं?

इस पर सेक्रेटरी तरबियत ने अर्ज किया कि नमाज़ बा-जमाअत के हवाले से संख्या कम है। हमारा ख्याल है सिर्फ 44 फीसद लज्ना अपने घरों में नमाज़ बा-जमाअत अदा कर रही हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि लज्ना अपने बच्चों को नमाज़ की अदायगी की तरफ कैसे तवज्जो दिलाती हैं? यह भी माँ का फर्ज होता है कि वह अपने बच्चों को नमाज़ की अदायगी करवाए। कम से कम तेरह-चौदह साल तक उम्र के बच्चों को नमाज़ के लिए कहें। इसके बाद वह कुछ हद तक आजाद (independent) हो जाते हैं। तो इस हवाले से भी शोबा-ए-तरबियत कोई काम कर रहा है?

इस पर सेक्रेटरी तरबियत ने अर्ज किया कि हम माओं को भी तवज्जो दिलाते हैं कि वह अपने बच्चों को नमाज़ की अदायगी के लिए कहा करें।

* नेशनल सेक्रेटरी तबलीग ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि इस वक्त तक हमारे पास 24 नौमुबईआत (नव-मुबई) हैं और इंशा अल्लाह इस संख्या में मज़ीद भी इजाफा हो जाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तेफसार पर नेशनल सेक्रेटरी तबलीग ने अर्ज किया कि इन नौमुबईआत का ताल्लुक मुख्तलिफ कौमों और मज़ाहिब से है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फरमाई कि इन नौमुबईआत का ब्रेकडाउन करके कि उनमें से कितनी अमेरिकन हैं और कितनी का ताल्लुक दीगर कौमों से है, यह मालूमात सेक्रेटरी नौमुबईआत को मुहैया कराया करें, ताकि सेक्रेटरी नौमुबईआत उनके हालात के मुताबिक उनके लिए तरबियत का प्रोग्राम बना सकें। इन नौमुबईआत में से अगर उनमें से कुछ मुसलमानों से अहमदी मुसलमान हुई हैं, या ईसाइयत से इस्लाम कबूल किया है या पहले दहरिया थीं या किसी और मज़हब से आई हैं, तो उनकी जरूरतों और हालात के मुताबिक उनकी तरबियत का इंतजाम किया जा सके।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तेफसार पर सेक्रेटरी तरबियत बराए नौमुबईआत ने अर्ज किया कि नौमुबईआत में अरब ख्वातीन भी हैं और बाज़ पाकिस्तानी हैं और बाज़ का ताल्लुक दीगर कौमों से है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि आपकी टीम में कोई अरबी जानने वाली खातून भी शामिल हैं? इस पर सेक्रेटरी तरबियत नौमुबईआत ने अर्ज किया कि फिलहाल उनकी टीम में कोई अरब खातून नहीं है। जबान के हवाले से अरब ख्वातीन से राबता करने में किसी किस्म की कोई मुश्किलात का सामना नहीं है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मेरा ख्याल है अब तो पुराने अरब अहमदी भी काफी हैं, जो आपकी इस सिलसिले में मदद कर सकते हैं। अगर जबान का मसला न भी हो, तो कल्चर का फर्क भी होता है। इसलिए कोई अरबी खातून ज्यादा बेहतर तरीके पर अरब नौमुबईआत की देखभाल कर सकती हैं। सिर्फ जबान ही एक रोक नहीं है, और भी कई चीजें देखनी पड़ती हैं।

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी तबलीग से दरयाफ़्त फ़रमाया कि आपका दुरान-ए-साल कितनी बैअतों का टारगेट है? यह जो 24 नौमुबईआत आपने बताई हैं, वह लज्ना के जरिए अहमदी हुई हैं?

सेक्रेटरी तबलीग ने अर्ज किया कि हमारा 50 से 60 बैअतों का टारगेट है। और 24 की संख्या लज्ना के जरिए अहमदी होने वाली ख्वातीन की है। लेकिन मैंने इस हवाले से सेक्रेटरी तरबियत नौमुबईआत से बात की थी कि दीगर तंज़ीमों या जमाअतों की तरफ से होने वाली बैअतों के हवाले से भी मालूमात होनी चाहिए।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अब तो साल खत्म होने वाला है और आप इस वक्त प्लानिंग कर रही हैं। अब तो अगले टर्म के इलेक्शन होने वाले हैं और इसके बाद नई आमिला बनेगी। इसलिए आप यह चीजें नोट कर लें और अगर आपकी जगह कोई और सेक्रेटरी तबलीग आती हैं, तो उनको इस हवाले से रिकमेंड (recommend) करें।

* इसके बाद सेक्रेटरी खिदमत-ए-खल्क ने रिपोर्ट देते हुए बताया कि लज्ना इमाइल्लाह अमेरिका की तरफ से अफ्रीका में एक मॉडल विलेज की तामीर का मंसूबा है और इसके लिए 75 हज़ार अमेरिकन डॉलर दिया है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बहुत अच्छी बात है। मैंने अंसारुल्लाह को भी लज्ना की मिसाल देकर कहा था कि अगर लज्ना मॉडल विलेज के लिए खर्च बर्दाश्त कर सकती हैं, तो अंसारुल्लाह को भी चाहिए कि किसी बड़े प्रोजेक्ट का खर्च बर्दाश्त करें। मैं आप लोगों को इसलिए बता रहा हूँ कि आप अपने खाविंदों को इस तरफ तवज्जो दिलाया करें।

सेक्रेटरी खिदमत-ए-खल्क ने मज़ीद रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि हमने इस साल 40 हज़ार डॉलर्स ईद के मौके पर बच्चों को तोहफे देने के लिए पेश किए हैं और आठ लज्ना को 'खदीजा स्कॉलरशिप' दी गई, ताकि वह अपनी पढ़ाई मुकम्मल कर सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़्त फरमाने पर सेक्रेटरी खिदमत-ए-खल्क ने बताया कि चैरिटी वॉक्स और मीना बाजारों के जरिए भी 13 हज़ार डॉलर्स से ज़्यादा की रकम ह्यूमैनिटी फर्स्ट को दी गई। इसके अलावा बहुत सी लज्ना बराह-ए-रास्त भी ह्यूमैनिटी फर्स्ट में डोनेट (donate) करती हैं।

* इसके बाद सेक्रेटरी नासिरात ने रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि इस वक्त अमेरिका भर में नासिरात की संख्या 1015 है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मेरे ख्याल में यह संख्या दुरुस्त नहीं है। नासिरात की संख्या 1015 से ज़्यादा होनी चाहिए।

सेक्रेटरी नासिरात ने अर्ज किया कि हुज़ूर-ए-अनवर ने दुरुस्त फ़रमाया है, क्योंकि काफी नई फैमिलीज वगैरह आई हैं और उनकी संख्या का अभी इल्म नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फरमाई कि सेक्रेटरीयात-ए-तजनीद को चाहिए कि वह घर-घर जाकर तजनीद के हवाले से मालूमात लें। तजनीद का काम ग्रासरूट लेवल (grass root level) पर होना चाहिए। ख्वातीन तो दूसरी ख्वातीन के घरों के अंदर भी जा सकती हैं, जबकि मर्द घरों के अंदर नहीं जा सकते। इसलिए लज्ना के पास तजनीद के हवाले से ज़्यादा मालूमात होनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मुझे ह्यूस्टन में बताया गया था कि जब लोगों को मेरी अमेरिका में आमद का पता चला, तो बेशुमार लोगों ने मुलाकात के हवाले से दरख्वास्तें देनी शुरू कर दीं और उनका जमाअत को इल्म ही नहीं था। इस तरह फैमिलीज की एक बड़ी संख्या थी, जिनका जमाअत के

साथ राबता हुआ। इसलिए लज्ना बेहतर तौर पर तजनीद डिपार्टमेंट की मदद कर सकती है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मेरा ख्याल है कि आपने हैलोवीन (Halloween) वगैरह के मुताल्लिक नासिरात को बताने के लिए कोई प्रोग्राम वगैरह नहीं किए। वाकिफात-ए-नौ की क्लासों में बहुत सी बचियों को इस हवाले से इल्म नहीं था और मुझसे पूछ रही थीं। असल मसला यह है कि ग्रासरूट लेवल पर जाकर काम नहीं होता।

* इसके बाद मुआविना सदर ने बताया कि उनके सुपर्द 'मीडिया वॉच' का काम है। हम लज्ना को तवज्जो दिलाती हैं कि वह अखबारात व रसाइल में खत और ऑप-एड्स (op-eds) लिखें।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि अभी तक कितनी लज्ना ने खत या ऑप-एड्स लिख कर भजवाए हैं? इस पर मुआविना सदर ने अर्ज किया कि गुज़िश्ता साल 58 लज्ना ने 109 खत और मज़ामीन लिखे थे। इसको बेहतर बनाने के हवाले से हम काम कर रहे हैं और अब हमने माहाना कैंपेन (campaigns) शुरू की हैं। जैसे नवंबर में थैंक्स गिविंग (thanksgiving) का पीरियड है, इस हवाले से इस्लाम में थैंक्सगिविंग के तसव्वुर के बारे में मज़ामीन लिखने की तहरीक की है। इसी तरह मुख्तलिफ हालात-ए-हाजिरा के मसाइल की रोशनी में भी तहरीक की जाती है।

* सेक्रेटरी इशाअत ने रिपोर्ट देते हुए बताया कि हमारा सहमाही रिसाला की डिजिटल (digital) कॉपी समस्त लज्ना को जाती है। और इसको रिकॉर्ड के लिए थोड़ी सी संख्या में प्रिंट भी किया जाता है।

* इसके बाद सेक्रेटरी सिहहत व जिस्मानी ने रिपोर्ट देते हुए बताया कि इस वक्त 25 फीसद लज्ना वर्जिश करती हैं। हमने अब जमाअती प्रोग्रामों और मीटिंग्ज में वर्जिश पर जोर देना शुरू किया है।

* इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़्त फरमाने पर सेक्रेटरी तजनीद ने अर्ज किया कि वह तजनीद के हवाले से मुतमइन नहीं हैं, लेकिन अब लोकल सेक्रेटरीयात-ए-तजनीद के जरिए कोशिश कर रही हैं। बाज़ मजालिस की लोकल सेक्रेटरीयात एक्टिव (active) नहीं हैं।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सदर लज्ना से मुखातिब होते हुए फ़रमाया कि सेक्रेटरीयात-ए-तजनीद हों या किसी भी और शोबे की कोई सेक्रेटरी हों, अगर वह एक्टिव नहीं हैं और अपनी जिम्मेदारी अदा नहीं कर रही हैं, तो आपके पास इख्तियार है कि ऐसी सेक्रेटरीयात को तब्दील कर दें और उनकी जगह ऐसी लज्ना को लेकर आएँ जो एक्टिव हों। कम से कम आपके पास मालूमात तो पूरी हों।

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़्त फरमाने पर सेक्रेटरी तजनीद ने बताया कि इस वक्त लज्ना की कुल तजनीद 6291 है। लेकिन हमारे पास उम्र के मुताबिक तजनीद का ब्रेकडाउन (breakdown) नहीं है।

* मुआविना सदर बराए वाकिफात-ए-नौ ने रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि इस वक्त हमारे पास 611 वाकिफात-ए-नौ हैं। इनमें से 311 पंद्रह साल से ज़्यादा उम्र की हैं। 241 अठारह साल या उससे ऊपर की हैं। इन सब ने अपने वक्फ के मुआहदे की तजदीद कर ली है।

हुज़ूर-ए-अनवर के दरयाफ़्त फरमाने पर मुआविना साहिबा ने अर्ज किया कि हम रिपोर्ट सदर-ए-लज्ना और नेशनल सेक्रेटरी वक्फ-ए-नौ को भजवाते हैं। वह फिर आगे मर्कज़ में भजवाते हैं।

* इसके बाद सेक्रेटरी सनअत व तिजारत ने अपनी रिपोर्ट पेश की।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हाल में काफी इमिग्रेंट्स (immigrants) आए हैं और जबान न आने और इस तरह के दीगर मसाइल की वजह से जॉब वगैरह न होने के हवाले से उन्हें मुश्किलात दरपेश हैं। आपको इस हवाले से डेटा (data) इकट्ठा करना चाहिए और फिर उस डेटा के मुताबिक कोई प्रोग्राम तैयार करके उन्हें दें। उन्हें सिलाई, कढ़ाई वगैरह सिखाने या सिलाई, कढ़ाई करने के हवाले से मदद दी जा सकती है। उनकी प्रोडक्ट्स (products) को मार्केट करके उन्हें उसका कुछ हिस्सा दिया जा सकता है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस हवाले से आपके पास डेटा भी होना चाहिए कि कितनी लज्ना मेंबरात की जॉब के हवाले से मदद की गई।

* सेक्रेटरी उमूरे तालिबात ने अपने विभाग की रिपोर्ट पेश की। इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह नया शोबा है। निज फ़रमाया कि क्या आपके पास डेटा मौजूद है कि कितनी तालिबात हाई स्कूल में हैं, कितनी कॉलेजों में हैं, कितनी यूनिवर्सिटी में हैं और कितनी दीगर प्रोफेशनल फील्ड्स में तालीम हासिल कर रही हैं?

इस पर सेक्रेटरी उमूरे तालिबात ने बताया कि हमने हाल ही में सर्वे किया है, जिसका 369 लोगों ने उत्तर दिया है और अभी मज़ीद डेटा जमा कर रहे हैं। इस वक्त सात चैप्टर्स (chapters) हैं जहाँ एएमएसए (AMSA) काम कर रही है। अभी मज़ीद जमाअतों में भी इसको कायम करने के हवाले से काम हो रहा है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़्त फरमाने पर सेक्रेटरी उमूरे तालिबात ने बताया कि एएमएसए अपनी-अपनी यूनिवर्सिटियों में तबलीग कर रही हैं और खिदमत-ए-खल्क के काम भी करती हैं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि एएमएसए की सदरान को यह भी कहें कि वह तालिबात को तवज्जो दिलाती रहें कि वह इस्लामी तालीमात की मुकम्मल पैरवी करें।

* इसके बाद सेक्रेटरी माल ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया: हमारा कुल बजट 3 लाख 82 हज़ार डॉलर्स का था और अलहमदुलिल्लाह हमने 4 लाख 27 हज़ार से ज़्यादा की वसूली की, जो कि प्रपोज्ड बजट (proposed budget) से तेरह फीसद ज़्यादा थी।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़्त फरमाने पर सेक्रेटरी माल ने बताया कि हमारी कमाने वाली लज्ना मेंबरात की संख्या एक हज़ार से ज़्यादा है। और उनका कुल चंदा 2 लाख 42 हज़ार से ज़्यादा था।

सदर लज्ना ने अर्ज किया कि मेरे ख्याल में यह संख्या कम है। कुल संख्या इससे ज़्यादा होगी। इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अगर मुकामी मजालिस की सेक्रेटरीयात-ए-माल एक्टिव हों, तो आप इस हवाले से बेहतरी ला सकती हैं।

* सेक्रेटरी माल ने बताया कि इज्तिमा के चंदे की कुल वसूली 74 हज़ार डॉलर्स से ज़्यादा है, जबकि इज्तिमाअत पर कुल खर्च 59 हज़ार डॉलर्स से ज़्यादा आता है। रीजनल इज्तिमाअत पर हम सिर्फ जियाफत का खर्च देते हैं। बाकी अखराजात रीजन खुद उठाता है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़्त फरमाने पर सदर लज्ना ने बताया कि मुल्क में कुल चार इज्तिमाअत होते हैं। दुरान-ए-साल इन चारों इज्तिमाअत की हाजिरी 2337 थी।

सदर लज्ना ने अर्ज किया कि क्या उन्हें इज्तिमा पर मज़ीद अखराजात करने चाहिए?

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपको हाजिरी में इजाफा करना चाहिए और इसके साथ इज्तिमा पर ज़्यादा खर्च करना चाहिए। लेकिन फजूल खर्ची नहीं होनी चाहिए, बल्कि एहतियात के साथ खर्च करें और हाजिरी में इजाफा करें।

* सेक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद ने रिपोर्ट देते हुए बताया कि गुज़िश्ता साल हमने 5 लाख 69 हज़ार डॉलर्स से ज़्यादा वसूल किए थे, जिस में गुज़िश्ता से पैवस्ता साल में 20 हज़ार का इजाफा था। हमारा कोई बजट या टारगेट मुकर्रर नहीं था, लेकिन हमने कोशिश की थी कि 100 फीसद लज्ना तहरीक-ए-जदीद में शामिल हों। इसमें सात हज़ार से ज़्यादा शामिलीन थे। इनमें लज्ना, नासिरात और सात साल से छोटी उम्र के बच्चे भी शामिल हैं।

सेक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद ने बताया कि हमने एक जगह भी खरीदी है, जिसमें एक घर भी तामीरशुदा है। वहाँ लज्ना हॉल तामीर करने का मंसूबा है, जिस में 500 लज्ना आ सकती हैं। इसके साथ दफ्तर और कुछ कमरे वगैरह बनाने का भी प्रोग्राम है। इस वक्त हमने तामीराती कामों की प्लानिंग और इजाजत वगैरह का काम शुरू किया है।

* सेक्रेटरी वक्फ-ए-जदीद ने बताया कि उनके सुपर्द वक्फ-ए-जदीद के अलावा मुआविना सदर बराए पब्लिक अफेयर्स के उमूर भी हैं। सेक्रेटरी वक्फ-ए-जदीद ने बताया कि वक्फ-ए-जदीद में शामिलीन की कुल संख्या 7300 से ज़्यादा थी, जिस में नासिरात, सात साल से छोटी उम्र की बचियाँ भी शामिल हैं। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 2012 में हमें हिदायत फरमाई थी कि लज्ना टारगेट में से 20 फीसद नासिरात का टारगेट होना चाहिए।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि चंदे की रकम की बजाय मुझे उसमें शामिल होने वालों की संख्या का ज़्यादा फिक्र होता है। इसलिए कोशिश करें कि सारी नासिरात इस में शामिल हुआ करें।

सेक्रेटरी वक्फ-ए-जदीद ने बताया कि साल 2017 में वक्फ-ए-जदीद के हवाले से हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया था कि चंदे में कमी नहीं, लेकिन रिपोर्टिंग सिस्टम ठीक नहीं है, इसलिए मुकम्मल रिपोर्ट नहीं आती। इसलिए हमने इस साल अपना रिपोर्टिंग सिस्टम तब्दील किया है, जिस की वजह से अलहमदुलिल्लाह शामिलीन की संख्या में खातिरख्वाह इजाफा हुआ है।

* मुआविना सदर बराए पब्लिक अफेयर्स ने रिपोर्ट देते हुए बताया कि 2017 में हमने मुकामी मजालिस में 117 प्रोग्राम मुनअकिद किए थे। इस के अलावा इस वक्त 21 ख्वातीन सीनेटर्स हैं और हमने समस्त ख्वातीन सीनेटर्स से मुलाकातें की हैं। यह नया शोबा है, इसलिए इसमें हम अभी मज़ीद काम कर रहे हैं। हर साल 9/11 कैंपेन भी करते हैं, जिस में जो भी ख्वातीन मेयर्स, ख्वातीन सीनेटर्स या दीगर ख्वातीन जो आला अहदों पर फाइज हैं, उनके साथ मीटिंग्ज की जाती हैं। इन मीटिंग्ज में हम जमाअत अहमदिया और लज्ना इमाइल्लाह की तंज़ीम का तआरुफ करवाते हैं। इस का बड़ा अच्छा फीडबैक मिलता है।

* मुआविना सदर ने अर्ज किया कि हम नेशनल डे ऑन द हिल (Day on Hill) का इनिकाद करती हैं। क्या इस में समस्त मजालिस की नुमाइंदगी जरूरी है? हमारी 74 मजालिस हैं और इस मौके पर तकरीबन 45 की संख्या होती है।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि समस्त मजालिस की नुमाइंदगी जरूरी नहीं है, लेकिन कुछ न कुछ नुमाइंदगी होनी चाहिए। हर साल इस में नई मजालिस और नए मेंबर्ज शामिल कर लिया करें। इस से उन्हें भी पता चलता रहेगा कि आप लोग यहाँ क्या करती हैं और इस से उन्हें मुकामी तौर पर राबता करने में भी फायदा होगा।

* इसके बाद रीजनल सदरान-ए-लज्ना इमाइल्लाह ने बारी-बारी अपने-अपने रीजन्ज का तआरुफ करवाया और हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने उन रीजन्ज की मजालिस और लज्ना मेंबर्ज की संख्या के मुताल्लिक इस्तेफसार

फ़रमाया।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि रीजनल सदरान का अपने-अपने रीजन की सारी लज्ना मेंबर्ज के साथ राबता होना चाहिए। और तजनीद के रिकॉर्ड के हवाले से भी काम होना चाहिए।

* इसके बाद सदर साहिबा-ए-लज्ना ने अर्ज किया कि लज्ना सेक्शन प्राइवेट सेक्रेटरी ने हमें हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मनी की नेशनल आमिला लज्ना इमाइल्लाह की मीटिंग के मिनट्स (minutes) भजवाए थे। उन में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फरमाई थी कि हाइज़ वाली ख्वातीन को मसजिद जाने की इजाजत नहीं है।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह मेरी हिदायत नहीं है, बल्कि यह हदीस है।

सदर लज्ना ने अर्ज किया कि बाज़ अव्कात शूरा या दीगर प्रोग्रामों के वक्त बाज़ लज्ना अपने हाइज़ की वजह से प्रोग्रामों में शामिल नहीं हो पातीं।

इस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आप को चाहिए कि ऐसे प्रोग्राम्ज का इनिकाद मसजिद के अंदर न किया करें। लेकिन अगर मसजिद के अंदर करती हैं, तो फिर ऐसी ख्वातीन जिन के हाइज़ के दिन चल रहे हों, उन्हें इन प्रोग्रामों में शामिल होने से इस्तिसना देना चाहिए।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हत्ता कि ईद के हवाले से भी खास तौर पर हदीस में आया है कि हाइज़ा औरतें मसजिद न जाएँ। हालाँकि ईद की नमाज़ या ईद का खुत्बा फर्ज है, लेकिन इस के बावजूद वाजेह तौर पर फ़रमाया कि हाइज़ा औरतें मसजिद में दाखिल न हों और मसजिद से बाहर बैठ कर खुत्बा सुनें। इसलिए मसजिद के हॉल के अलावा अगर कोई कमरा वगैरह हो, तो वहाँ औरतों को बिठा दिया करें। इसी तरह अपनी मीटिंग्ज वगैरह भी उन्हीं जगहों पर मुनअकिद किया करें।

मीटिंग के आखिर पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अब इंतिखाबात के बाद हो सकता है कि नई सदर लज्ना का इंतिखाब हो और फिर नई आमिला मुंतखिब हो। इसलिए आप लोगों को चाहिए कि सारी हिदायात और अपने तजरबात के हवाले से अपने बाद आने वाली सेक्रेटरीज को बताएँ। आम तौर पर यही होता है कि जिस शोबे ने जो भी प्लानिंग की होती है, वह आप के दराजों में पड़ी रहती है, इसलिए नए आने वाली सेक्रेटरीज को इन सारी चीजों से मुत्तला किया करें।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर नए आने वाली सदर लज्ना आप में से किसी को शोबे की सेक्रेटरी नहीं बनातीं, तो आप के दिल में किसी किस्म का बुग्ज नहीं होना चाहिए।

तकरीब-ए-आमीन

नेशनल मजलिस-ए-आमिला यूएसए की हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ यह मीटिंग करीब साढ़े सात बजे तक जारी रही। इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मसजिद के मर्दाना हॉल में तशरीफ़ ले आए और कार्यक्रम के मुताबिक तकरीब-ए-आमीन का आगाज हुआ।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 26 बच्चों और बच्चियों से कुरआन करीम की एक-एक आयत सुनी और आखिर पर दुआ करवाई।

प्रिय: मुईज़ अहमद खान, फारन अहमद, हसन रशीद, सर्मद अहमद वर्क, शाहनवाज़ अहमद, सर्मद अहमद, इब्राहिम हामिद कुरैशी, रकीम अहमद साही, वासे मलिक, हसन महमूद वानी, फौजान अहमद, सरीम विलदान अहमद (Sarim Wildan Ahmed)।

प्रिय: नुरुल ऐन नईम, रूबिन अहमद खान, उबैहा हुरैम, उबैया उस्मान, अताउल् नूर मलिक, सबीका कामरान देओ (Deo), इयान अहमद काशान, सनम सलीम, नाजिया अहमद, रियाम सुल्तान अहमद, सबाहा अहमद, हिबतुल इस्लाम शाहिद, माया ताहिर, नशमिया (Nashmia) सआदत।

तकरीब-ए-आमीन के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़-ए-मगरिब व इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

... ... (शेष)

शोक संवाद तथा दुआ-ए-मग़फ़िरत

श्रीमान तन्वीर अख्तर साहिब पुत्र श्रीमान स्वर्गीय इरशाद अहमद साहिब , जमाअत अहमदिया अमरोहा यू.पी. का 21 अगस्त 2025 को देहांत हो गया है।

मरहूम की पीछे दो पुत्रियाँ हैं। मरहूम की मग़फ़िरत और दर्जात की बुलंदी के लिए जमाअत के लोगों से दुआ का निवेदन है।

मुसव्विर अहमद अमरोही

पृष्ठ 12 का शेष

ग़ैब की ख़बरें पाने वाला भी। और इस तौर से ख़ातमुन्नबिय्यीन की मोहर महफ़ूज़ रही क्योंकि मैं ने इनिकासी और ज़िल्ली तौर पर मुहब्बत के आईने के ज़रिए से वही नाम पाया। अगर कोई शख़्स इस वही इलाही पर नाराज़ हो कि क्यों ख़ुदा तआला ने मेरा नाम नबी और रसूल रखा है तो यह उस की हमाकत है क्योंकि मेरे नबी और रसूल होने से ख़ुदा की मोहर नहीं टूटती।"

(एक ग़लती का इज़ाला, रूहानी ख़ज़ाइन भाग 18, पृष्ठ 210-211)

अपनी एक और तसनीफ में आप फरमाते हैं: "हमारा यह ईमान है कि आख़िरी किताब और आख़िरी शरीअत क़ुरआन है और बाद उस के क़ियामत तक उन मअनी से कोई नबी नहीं है जो साहिब-ए-शरीअत हो या बिलावसता मुताअते आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम वही पा सकता हो बल्कि क़ियामत तक यह दरवाज़ा बंद है और मुताअते नबवी से नेमत-ए-वही हासिल करने के लिए क़ियामत तक दरवाज़े खुले हैं। वह वही जो इत्तिबा का नतीजा है कभी मुनक़तिअ नहीं होगी मगर नबूवत शरीअत वाली या नबूवत-ए-मुस्तकिल्ला मुनक़तिअ हो चुकी है।"

(रिव्यू बर मुबाहिसा बटालवी चकड़ालवी, रूहानी ख़ज़ायन भाग 19, पृष्ठ 213)

'ख़िलाफ़त अला मिन्हाजिन्नबुव्वत' से मुराद ख़िलाफ़त का वह सिलसिला है जो नबूवत के बाद उसी के नक़्श-ए-कदम पर और उसी के कामों को आगे बढ़ाने के लिए जारी होता है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में इस ख़िलाफ़त का वादा मोमिनीन के साथ इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाया है: वअदल्लाहुल्लज़ीना आमनू मिन्कुम व अमिलुस्सालेहाति लय-स्तख़लीफ़न्नहुम फिल अर्ज़ कमसतख़लफल्लज़ीना मिन कब्लिहिम व लयुमक्किनन्न लहुम दीनहुमुल्लज़ीरतज़ा लहुम व लयुबद्दिलन्नहुम मिम बअदि ख़ौफ़िहिम अम्ना, यअबुदूननी ला युश्रिकूना बी शैया, व मन कफर बअद ज़ालिका फ उलाइका हुमुल फासेकून। (सूरः नूर: 56)

अर्थात : अल्लाह ने तुम में से ईमान लाने वालों और मुनासिब हाल अमल करने वालों से वादा किया है कि वह उन को ज़मीन में ख़लीफ़ा बना देगा। जिस तरह उन से पहले लोगों को ख़लीफ़ा बना दिया था। और जो दीन उस ने उन के लिए पसंद किया है वह उन के लिए उसे मज़बूती से क़ायम कर देगा और उन के ख़ौफ़ की हालत के बाद वह उन के लिए अम्न की हालत बदल देगा। वह मेरी इबादत करेंगे (और) किसी चीज़ को मेरा शरीक नहीं बनाएँगे और जो लोग उस के बाद भी इन्कार करेंगे वह नाफरमानों में से क़रार दिए जाएँगे। फिर एक हदीस-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम में भी बयान हुआ है कि मा कानत नुबुव्वतुन क़त्तुन इल्ला तबिअतहा ख़िलाफ़तुन। यानी हर नबूवत के बाद ख़िलाफ़त होती है। (अल-जामिउस सग़ीर लिस्सुयूती, अल-जुज़ुस सानी, पृष्ठ 126, मतबुआ मिस्र 1306 हिजरी) इन इलाही वादों के मुताबिक़ पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के विसाल के मुआ बअद ख़िलाफ़त-ए-राशिदा की सूरत में 'ख़िलाफ़त अला मिन्हाजिन्नबुव्वत' का यह सिलसिला मोमिनीन में क़ायम हुआ। और फिर इस्लाम की नशअत-ए-सानी में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की एक पेशगोयी के मुताबिक़ यही सिलसिला आप के ग़ुलाम-ए-सादिक़ मसीह मुहम्मदी की बअसत के बाद क़ायम हुआ। चुनाँचे हमारे आक़ा व मौला हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने एक इरशाद में इस ख़ुशख़बरी को इस तरह बयान फ़रमाया है। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहो अन्हु की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया: तुम में नबूवत क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा फिर वह उस को उठा लेगा और 'ख़िलाफ़त अला मिन्हाजि-न्नबुव्वत' क़ायम होगी। फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा उस नेमत को भी उठा लेगा। फिर उस की तक़्दीर के मुताबिक़ ऐज़ा रसाँ बादशाहत क़ायम होगी जिस से लोग दिलगिरफ्ता होंगे और तंगी महसूस करेंगे। जब यह दौर ख़त्म होगा तो उस की दूसरी तक़्दीर के मुताबिक़ उस से भी बढ़ कर जाबिर बादशाहत क़ायम होगी। यहाँ तक कि अल्लाह तआला का रहम जोश में आएगा और उस ज़ुल्मो-सितम के दौर को ख़त्म कर देगा। उस के बाद फिर 'ख़िलाफ़त अला मिन्हाजिन्नबुव्वत' क़ायम होगी। यह फरमा कर आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ख़ामोश हो गए। (मुसनद अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह, भाग 6, पृष्ठ 285, मुसनद-दुन नोमान बिन बशीर, हदीस नंबर 18596, आलमुल कुतुब, बैरूत 1998) इस क़ुरआनी वादा और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मज़कूरह बाला इरशादात में यह पेशख़बरियाँ मौजूद थीं कि उम्मत-ए-मुहम्मदिया में अल्लाह तआला जहाँ 'ख़िलाफ़त अला मिन्हाजिन्नबुव्वत' के सिलसिले क़ायम फरमाएगा वहाँ उस के साथ मुसलमानों में कई दुनयावी किस्म की बाद-शाहतें और ख़िलाफ़तें भी क़ायम होंगी लेकिन 'ख़िलाफ़त अला मिन्हाजिन्नबुव्वत' की निशानी यह होगी कि वह ख़िलाफ़त शिद्दतपसन्दों का उत्तर शिद्दतपसन्दी के रवैये दिखा कर क़ायम नहीं होगी। मुस्लिम उम्मह के दो गिरोहों के दरमियान गोलियाँ चलाने और क़त्लो--ग़ारत करने से हासिल नहीं होगी बल्कि वह ख़िलाफ़त अल्लाह तआला के रहम को जोश दिलाने से क़ायम होने वाली ख़िलाफ़त होगी। और जो ख़िलाफ़त अल्लाह तआला के रहम और उस की इनायत के नतीजे में मिलेगी वह न सिर्फ अपने मुत्तबिअईन के लिए मुहब्बत, प्यार और ख़ौफ़ के बाद अम्न का सामान करने वाली होगी, दीन की मज़बूती की ज़ामिन होगी, अल्लाह तआला की तौहीद को दुनिया में क़ायम करने वाली होगी बल्कि कुल दुनिया के लिए भी अम्न की ज़मानत होगी। हुकूमतों को इंसाफ करने और ईमानदारी इख़्तियार करने की तरफ तवज्जो दिलाएगी। अवाम को ईमानदारी और मेहनत से फ़राइज़ की अदायगी की तरफ तवज्जो दिलाएगी। पस यह काम जिस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद क़ायम होने वाली ख़िलाफ़त-ए-राशिदा ने किए आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रूहानी फ़र्ज़ंद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बअसत के नतीजे में क़ायम होने वाली ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया हक़्क़ा इस्लामिया भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से यही काम इस ज़माने में अंजाम देने की तौफ़ीक़ पा रही है।

... ... (शेष)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 11 September 2025 Issue No. 37

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

...एक गैर-जमाअत महिला द्वारा जमाअत के बारे में पूछे गए कुछ प्रश्नों के बेसीरत अफ़रोज़ उत्तर तथा कुछ सपनों की ताबीर

...दीन के उलमा और अक़्ल रखने का दावा करने वाले मुसलमानों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त में पूरी होने वाली भविष्यवाणियाँ नज़र क्यों नहीं आतीं?

...हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नबूव्त किस किस्म की थी और 'ला नबी बअदी' की क्या वज़ाहत है?

...'खिलाफ़त अला मिन्हाजिन्नबुव्वत' से क्या मुराद है?

...'मीनार-ए-मसीह' को तामीर करने का क्या मक़सद था?

...अहादीस में मज़कूर है कि हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम के ज़ुहूर के चालीस साल बाद क़ियामत का ज़ुहूर होगा, इससे क्या मुराद है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त-41)

प्रश्न: एक गैर-जमाअत महिला ने हुज़ूर अनवर ऐदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की खिदमत-ए-अक्दस में अपनी और अपने भाई की कुछ ख़्वाबें लिखकर उनके बारे में हुज़ूर अनवर से रहनुमाई चाही, इसके अलावा जमाअत के बारे में अपने कुछ प्रश्नों के उत्तर भी हुज़ूर अनवर से हासिल किए। इसी तरह एक अहमदी लड़के से शादी करने की इजाज़त भी माँगी। हुज़ूर अनवर ऐदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब मूअर्रखा 22 अगस्त 2021 में इस ख़त के उत्तर में दर्ज़-ज़ैल हिदायात अता फरमाईं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: जहाँ तक शादी का तअल्लुक़ है तो अगर वह लड़का भी आपसे शादी करना चाहता है तो उसे ख़ुद यह बात पूछनी चाहिए। आपने अपनी और अपने भाई की जो ख़्वाबें तहरीर की हैं, उनमें सफ़ेद परिंदों, सफ़ेद घरों और उन घरों में खाना-ए-काबा के होने का ख़ास तौर पर ज़िक्र है। ख़्वाब में सफ़ेद रंग नेकी, ख़ैरो-बरकत और दीन की सफ़ाई की अलामत होती है। परिंदे रूहानी तरक़्क़ी की अलामत होते हैं। और किसी घर में खाना-ए--काबा का होना इस बात की तरफ इशारा है कि इस घर में अल्लाह तआला की रज़ा और उसकी ख़ुशनूदी शामिल है और घर वालों के दीन की इस्लाह और उनके हर किस्म के ख़ौफ़ से अम्न में होने की दलील है।

अल्लाह तआला आप की राह-ए-हक़ और हक़ीक़ी इस्लाम की तरफ रहनुमाई फरमाए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पेशगोयियों के ऐन मुताबिक़ मबऊस होने वाले मसीह मुहम्मदी अलैहिस्सलाम को पहचानने, उनके दावों को सद्क-ए--दिल से क़बूल करने और उनकी तालीमात पर अमल पैरा होकर अपनी दुनिया व आख़िरत सँवारने की तौफ़ीक़ अता फरमाए। आमीन।

समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण करने के बाद भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ग़ुलाम-ए-सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माने बग़ैर इस दुनिया से कोच कर जाने वालों को आख़िरत में कई किस्म के हम-व-ग़म का तो बहरहाल सामना करना पड़ता है क्योंकि वह सैय्यदुर्रसूल नबी आख़िरुज़्ज़मान खातमुन्नबिय्यीन हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अहकामात की तामील किए बग़ैर इस दुनिया से रुख़्सत हुए होते हैं। ख़्वाब में आप के वालिद साहिब का वफात के बाद ख़ौफ़नाक मनाज़िर के देखने का बयान उसी इंज़ार की तरफ इशारा है। अल्लाह तआला उनके साथ रहम का सुलूक फरमाए और उन की औलाद को सचाई पहचानने और उसे क़बूल करके उनके हक़ में मक़बूल दुआओं की तौफ़ीक़ अता फरमाए। आमीन।

बाक़ी जहाँ तक आप के प्रश्नों का तअल्लुक़ है तो उन के तफ्सीली उत्तर तो हमारे सिलसिले की मुख़्तलिफ किताबों में मौजूद हैं, वहाँ से आप यह तफ्सीली उत्तर पढ़ सकती हैं। यहाँ इख़्तिसार के साथ में उन का उत्तर आप को बता देता हूँ।

दीन के उलमा और अक़्ल रखने का दावा करने वाले मुसलमानों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त में पूरी होने वाली पेशगोयियों और निशानियों का नज़र न आना कोई तअज्जुब की बात नहीं। क्योंकि ईमान अल्लाह तआला के फ़ज़्लों से नसीब होता है। सिर्फ किसी के इल्म और अक़्ल की बिना पर हासिल नहीं हो जाता। इस की सब से बड़ी मिसाल हमारे आक़ा व मौला हज़रत अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नूर-ए-नबूवत को हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहो अन्हु जैसे एक अनपढ़ और नाख़्वान्दा ग़ुलाम ने तो पहचान लिया लेकिन मक्का की वादी का सरदार और हिकमत का बाप कहलाने वाला (अबुल हकम) इस नूर को न देख सका और इस नूर-ए-नबूवत को न मानने के नतीजे में अबू जहल कहलाया।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अपनी ज़ात के बारे में 'ला नबी बअदी' के अल्फ़ाज़ फरमाने की हक़ीक़त हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा (जिन के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि दीन का निस्फ़ इल्म आयशा से सीखो) ने इस तरह बयान फरमाई कि क़ूलू ख़ातमन्नबिय्यीना व ला तक़ूलू ला नबिय्या बअदहू। (मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा, जुज़ 6, हदीस नंबर 219) यानी तुम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को 'ख़ातमुन्नबिय्यीन' तो कहो लेकिन यह न कहो कि आप के बाद नबी नहीं होगा।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा के इस फरमान की वजह यह थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और खिलाफ़त-ए-राशिदा का ज़माना गुज़रने के बाद लोग इस ग़लत फहमी का शिकार होना शुरू हो गए थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद हर किस्म की नबूवत का दरवाज़ा बंद हो गया। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा चूँकि आख़िरीन में मबऊस होने वाले मसीह मुहम्मदी के बारे में क़ुरआन करीम और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बयान फरमूदा दूसरी बशारात से भी वाक़िफ़ थीं इसलिए आप ने उस ज़माने में लोगों में पैदा होने वाली इस ग़लत फहमी को दूर करने के लिए यह इरशाद फ़रमाया कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को 'ख़ातमुन्नबिय्यीन' (नबियों की मोहर) तो कहें यानी अब जो भी नबी दुनिया में मबऊस होगा वह सिर्फ और सिर्फ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इत्तिबा और आप के फ़्यूज़ की बरकत से होगा और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ही की शरीअत के ताबे होगा। लेकिन यह न कहें कि आप के बाद किसी भी किस्म का नबी नहीं आ सकता। क्योंकि यह बात हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के 'ख़ातमुन्नबिय्यीन' के मक़ाम के मुनाफ़ी है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मक़ाम 'ख़ातमुन्नबिय्यीन' साबित ही तब होता है जब आप का कोई उम्मती आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़्यूज़ो-बरकात और आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इत्तिबा व इताअत की बदौलत आप से ज़िल्ली, बुरूज़ी और उम्मती नबूवत का मक़ाम हासिल करे। इस हक़ीक़त को बयान करते हुए बानी-ए-जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिस ने मुझे भेजा है और जिस पर इफ़्तिरा करना लानतियों का काम है कि उस ने मसीह मौऊद बना कर मुझे भेजा है और मैं जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ की आयतों पर ईमान रखता हूँ वैसा ही बग़ैर फ़र्क़ एक ज़र्रे के ख़ुदा की उस खुली खुली वही पर ईमान लाता हूँ जो मुझे हुई जिस की सचाई उस के मुतवातिर निशानों से मुझ पर खुल गई है और मैं बैतुल्लाह में खड़े हो कर यह क़सम खा सकता हूँ कि वह पाक वही जो मेरे पर नाज़िल होती है वह उसी ख़ुदा का कलाम है जिस ने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर अपना कलाम नाज़िल किया था। मेरे लिए ज़मीन ने भी गवाही दी और आसमान ने भी। इस तरह पर मेरे लिए आसमान भी बोला और ज़मीन भी कि मैं खलीफ़तुल्लाह हूँ मगर पेशगोयियों के मुताबिक़ ज़रूर था कि इन्कार भी किया जाता इसलिए जिन के दिलों पर पर्दे हैं वह क़बूल नहीं करते। मैं जानता हूँ कि ज़रूर ख़ुदा मेरी ताईद करेगा जैसा कि वह हमेशा अपने रसूलों की ताईद करता रहा है। कोई नहीं कि मेरे मुक़ाबिल पर ठहर सके क्योंकि ख़ुदा की ताईद उन के साथ नहीं। और जिस जिस जगह मैं ने नबूवत या रिसालत से इन्कार किया है सिर्फ उन मअनी से किया है कि मैं मुस्तकिल्ल तौर पर कोई शरीअत लाने वाला नहीं हूँ और न मैं मुस्तकिल्ल तौर पर नबी हूँ मगर उन मअनी से कि मैं ने अपने रसूल मुक़्तदा से बातिनी फ़्यूज़ हासिल करके और अपने लिए उस का नाम पा कर उस के वास्ते से ख़ुदा की तरफ से इल्म-ए-ग़ैब पाया है रसूल और नबी हूँ मगर बग़ैर किसी जदीद शरीअत के। इस तौर का नबी कहलाने से मैं ने कभी इन्कार नहीं किया बल्कि उन्हीं मअनी से ख़ुदा ने मुझे नबी और रसूल करके पुकारा है सो अब भी मैं उन मअनी से नबी और रसूल होने से इन्कार नहीं करता। और मेरा यह क़ौल कि 'मन नीसतम रसूल व नया वर्दा-ए-अम किताब' उस के मअनी सिर्फ इतने ही हैं कि मैं साहिब-ए-शरीअत नहीं हूँ। हाँ यह बात भी याद रखनी चाहिए और हरगिज़ फ़रामोश नहीं करनी चाहिए कि मैं बावजूद नबी और रसूल के लफ़्ज़ के साथ पुकारे जाने के ख़ुदा की तरफ से इत्तिला दिया गया हूँ कि यह समस्त फ़्यूज़ बिलावसता मेरे पर नहीं हैं बल्कि आसमान पर एक पाक वजूद है जिस का रूहानी इफ़ाज़ा मेरे शामिल-ए-हाल है यानी मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम। इस वास्ते को मलहूज़ रख कर और इस में हो कर और इस के नाम मुहम्मद और अहमद से मुसम्मा हो कर मैं रसूल भी हूँ और नबी भी हूँ यानी भेजा गया भी और ख़ुदा से

शेष पृष्ठ 11 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad